हिन्दू विश्व
राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

वर्ष 20 अंक 20

नवम्बर 01-15, 2017
कार्तिक शुक्ल- मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष
'साधारण' नामक विक्रम सम्वत्
वि. सं. 2074
युगाब्द 5119

संरक्षक मण्डल
श्री विष्णुहरि डालमिया

सम्पादक
मानवेन्द्र नाथ पंकज

परामर्शदाता
सर्वश्री
डॉ. नन्दकिशोर त्रिखा,
राजेन्द्र शर्मा,
धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार

व्यवस्था - श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. -09582555152
सज्जा - श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम,
प्रभाग - 6
रामकृष्ण पुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152
011-26178992,
011-26103495
ईमेल-hinduvishwa@gmail.com

वैधानिक सूचना
- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

- : मूल्य :-
विदेशों के लिए .....$ 50 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित
एक प्रति .....10 ₹
वार्षिक .....200 ₹
त्रिवर्षीय.....500 ₹
पंचवर्षीय .....800 ₹
दसवर्षीय.....1,500 ₹
पन्द्रह वर्षीय.....2,100 ₹

कुल पेज - 28

हर इंसान को दूसरे मौके का हक है लेकिन उसी गलती के लिए नहीं।

विहिप के तत्वावधान में बांग्लादेश में रोहिंग्या हिंदुओं - सहायतार्थ शिविर

सम्पादकीय

बेकाबू भीड़ द्वारा हत्या पर आमादा होने के बढ़ते प्रकरण 04
गोतस्करों का हमला : बीएसएफ का जांबाज अधिकारी शहीद.....05
राज्याभिषेक स्थल में सम्राट हेमचंद्र का स्मारक बनाने की मांग.....06
केरल में अभिव्यक्ति को कुचलने के लिए राज्य प्रायोजित हिंसा!.....07
हिन्दी के लिए सरसंघचालक जी से अपील.....09
विनम्रता व बल के समुच्चय दीनदयाल उपाध्याय.....10
अस्तित्व बचाने के लिए जूझते हिन्दू 12
महानदी की सभ्यता सिंधु सभ्यता से भी प्रचीन? 13
महर्षि वाल्मीकि के विचार आज भी प्रासंगिक : विनायकजी 14
हिन्दू संगम.....15
किसानों को कर्ज के चंगुल से निकालने के लिए डा. तोगड़िया ने दिए उपयोगी सुझाव 16
शुभकामना आदान-प्रदान कार्यक्रम.....17
संस्कृति के साथ विकास होता है : जीवेश्वर मिश्रा 19
दीवाली को दीवाली ही रहने दें!!.....20
बांग्लादेशी शरणार्थी और आदिवासियों में तनाव 22
भक्त शिरोमणि संत नामदेव.....23
अवैध बूचड़खाना देखने गए न्यायालय आयुक्तों के दल पर गोतस्करों द्वारा आक्रमण 24
अफ्रीका में हजारों वर्ष पहले कैसे पहुंच गया शिवलिंग? 26

जयन्ती पर विशेष

पुरा-वनस्पति शास्त्री डा. बीरबल साहनी

हरिकृष्ण निगम

तीन अप्रैल 1946 को पण्डित जवाहर लाल नेहरु ने लखनऊ में डॉ0 बीरबल साहनी पुरा– वनस्पति विज्ञान संस्थान की नींव रखी थी। यह भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अन्तर्गत एक स्वायत्त संस्थान है। यह संस्थान मात्र भारत ही नहीं बल्कि समूचे विश्व में अपने शोध कार्य के लिए प्रसिद्ध है। डॉ. बीरबल साहनी द्वारा लिखे अनेक ग्रंथ आज भी वनस्पति विज्ञान के छात्रों में पाठ्यपुस्तकों के रूप में पढ़ाए जाते हैं। इस महान वैज्ञानिक का अंत दिल के दौरे के कारण वृद्धावस्था में हुआ था जिन्होंने भारत का नाम अपने जीवन काल में ही दुनिया में गौरवान्वित किया था। आज जब भी किसी रूप में पर्यावरण जैविक व प्रकृति के संरक्षण की बात उठती है, इस विलक्षण प्रतिभा को याद करना चाहिए।

वैज्ञानिक डॉ0 बीरबल साहनी जो 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में पंजाब के एक अनामी से ग्राम में पैदा होकर देश के लिए एक बहुमुखी बनस्पति– वैज्ञानिक के रूप में एक अनूठे अनुसंधानकर्ता बन सके वह हमें आज भी विस्मित कर सकता है। भारत सहित सारे विश्व में पर्यावरण संरक्षण पर नारों के साथ विपुल सामग्री हमारे श्रय दृश्य व मुद्रित मीडिया में एक फैशन की तरह नित्य प्रस्तुत की जाती है पर बीरबल साहनी के अवदान को शायद ही कोई स्मरण करता है।

डॉ0 बीरबल साहनी का जन्म 14 नवम्बर 1891 को पश्चिमी पंजाब के शाहपुर जिले में भेड़ा नामक छोटे से गांव में हुआ था जहां इनके पिता प्रो. रुचिराम और माता ईश्वरी देवी प्राकृतिक वातावरण में शांतिपूर्ण जीवनयापन करते थे। बालक बीरबल को शुरु से ही प्रकृति से अत्यन्त लगाव था। वे घण्टों पहाड़ों की सुंदरता को निहारते रहते थे। वे आसपास के हरे– भरे पेड़ों, पहाड़ों, उत्पयकाओं की ओर आकर्षित रहते थे। उनकी इस रुचि को अनेक विद्वान व समाजसेवी ऐसा वातावरण निर्मित करने वाला मानते थे जहां उनके आगामी अध्ययन की एक विशिष्ट नींव पड़ रही थी, युवा बीरबल की पढाई लाहौर के सेण्ट्रल मॉडल स्कूल में हुई। बाद में 1919 में पंजाब विश्वविद्यालय से उन्होंने विज्ञान के स्नातक की परीक्षा पास की। उन दिनों स्वतंत्रता की लड़ाई शुरु हो चुकी थी जिसमें बीरबल भी सक्रिय भाग लेना चाहते थे पर उनके पिता ने इसे भांपकर उन्हें उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैण्ड भेज दिया।

मेधावी छात्र होने के कारण बीरबल ने अपना अगला सारा अध्ययन छात्रवृत्तियों के बल पर पूरा किया। यहां पर उनकी मुलाकात कई प्रसिद्ध वैज्ञानिकों से हुई, जहां वनस्पति शास्त्र में रुचि के कारण उन्होंने जीवित वनस्पति शास्त्र पर शोध किया तत्पश्चात् भारतीय वनस्पति अवशेषों पर शोध किया व इंग्लैण्ड में 1916 में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त कर प्रो. ए.सी. सेवार्ड के साथ शोधकार्य में जुट गए। अपने समय के श्रेष्ठ वनस्पति विशेषज्ञ के रूप में जर्मनी के म्यूनिख में विश्व के जाने माने वनस्पति शास्त्री प्रो. के0 गोबेन के साथ कार्य करने लगे।

डॉ0 साहनी पुरा– वनस्पति शास्त्र – पैलियो– बोटेनी के क्षेत्र में विश्व के सम्माननीय विशेषज्ञ कहलाने लगे।

लखनऊ स्थित बीरबल साहनी इंस्टीटयूट आफ पैलियो बोटनी पुरा बरस्पति शास्त्र के विषय का आज विश्वविख्यात संस्थान माना जाता है। इसके अन्तर्गत ऐसे पौधों का अध्ययन किया जाता है जो हजारों वर्ष पहले धरती पर मौजूद थे पर अब उनका अस्तित्व नहीं है और अब वे 'फासिल' Fossil में रूपान्तरित हो गए हैं। उनके अवशेष पहाड़ों की चट्टानों, कोयले की खदानों आदि में आज भी पाए जाते हैं। जीवाश्म वनस्पतियों पर काम करने की वजह से उन्हें फादर आफ इण्डिया पैलियो बोटिनी Fathar of palio boteny कहा जाने लगा। वेदकालीन या रामायण युग के अनेक लुप्त वनस्पतियों की आज भी खोज की जा सकती है।

वनस्पति विज्ञान की अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पत्रिकाओं में डॉ0 साहनी के शोध परिणाम प्रकाशित होते थे। डॉ0 साहनी को उनके शोध पर लंदन विश्वविद्यालय ने डॉक्टर की उपाधि दी थी। जिस पर उन्होंने कहा था कि भारत उनके दिल में सदैव बसा है और

जन्म 14 नव., 1891 मृत्यु 10 अप्रैल, 1949

इसीलिए वे 1919 में भारत वापस लौट आए थे। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में वनस्पति शास्त्र के प्राध्यापक के तौर पर कार्य करने के बाद 1933 में उनकी नियुक्ति लखनऊ विश्वविद्यालय के डीन पद पर हुई।

वे पुरा–वनस्पति विषय के प्रकाण्ड पंडित थे । पत्थरों के रूप में परिवर्तित व जीवाश्म बने पेड़ों से इतिहासकारों के समक्ष महाद्वीप के विभाजन संबंधी सिद्धांतों पर भौगोलिक व भूगर्भीय अध्ययन भी प्रस्तुत करते थे। उनकी इच्छा थी कि पुरातत्वविद् व इतिहासकार उनके अनुसंधान के आधार पर अपनी रचनाओं को आधारभूत बदलाव दें। 1921 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से तथा बाद में होनेवाली पुरा वनस्पति के विश्व अधिवेशन में इंग्लैण्ड की रायल सोसाइली ने उन्हें फैलोशिप Felloship प्रदान कर सम्मानित किया था। **स्टाकहोम में आयोजित जीवाश्मों व पौधों की विकास प्रक्रिया के अधिवेशन में उन्हें अध्यक्ष पद पर आसीन किया गया था।** उनका देहावसान 16 अप्रैल 1949 में उस समय हुआ जब वे अपनी प्रसिद्धि के शिखर पर थे।

मानवेन्द्र नाथ पंकज

बेकाबू भीड़ द्वारा हत्या पर आमादा होने के बढ़ते प्रकरण

विजयादशमी उद्‌बोधन में पू. सरसंघचालक जी द्वारा कहा गया था, ''हितसंबंधी शक्तियों द्वारा ऐसे वाक्यों के गलत अर्थ लगाकर सभी के दृष्टिकोणों को प्रभावित करने के चंगुल से शासन–प्रशासन के लोग भी मुक्त रहें, कानून का अमला अपराधी को अवश्य दण्ड दें, सज्जनों को उसका उपद्रव न हो, इसकी चिंता करें।''

बेंगलूरू में इंजीनियर नन्दिनी द्वारा पुलिस को साथ लेकर गोकशी को रंगे हाथ पकड़े जाने पर लगभग डेढ़ सौ लोगों द्वारा कानून का सम्मान करने वाली इसी महिला पर प्राणघातक हमला पू. सरसंघचालक जी की आशंका को सच साबित करता परिलक्षित कर रहा है। इस घटना से ऐसा लगता है कि न्याय मंदिर की लक्षित सक्रियता व संघप्रमुख के शब्दों में उच्च पदस्थों के 'सद्‌हेतु से दिए गए बयान' कानून का सम्मान करने वालों पर ही उपद्रव करने वालों की हौसला अफजाई कर रहे हैं! इस घटना का दुर्भाग्यजनक पहलू यह भी है कि नन्दिनी के बयान से संकेत मिलता है कि गोकशों/गोतस्करों व पुलिस के बीच चोली–दामन का साथ है!

ध्यान रहे कुछ ही दिनों पूर्व एनसीआर में एक एनआरआई महिला सोनिया शर्मा पर गोतस्करों ने गोली चलाई थी। त्रिपुरा में भारत– बांग्लादेश सीमा पर संदिग्ध गोतस्करों ने जिनकी संख्या 25 बताई जा रही है गश्त कर रहे बीएसएफ के सीओ दीपक के0 मण्डल पर हमला कर दिया, चार दिनों तक मृत्यु से जूझने के बाद वे शहीद हो गए।। कुछ ही दिनों पूर्व बंगाल में सीमा पर गोतस्करों द्वारा एक बीएसएफ कांस्टेबिल की हत्या उन तस्करों के कार्य में बाधा डालने पर कर दी गई थी। दुर्भाग्य जनक यह है कि बांग्लादेश से दोस्ती की मृगतृष्णा में केन्द्र सरकार ने सुरक्षा बलों को गो तस्करों के रहमो–करम पर छोड़ दिया है। रिपोर्ट बताती है कि विगत एक वर्ष में बीएसएफ जवानों पर 80 से ज्यादा बार गोतस्करों ने हमला किया है।

ये घटनाएं संकेत भर हैं, आए दिन ऐसी घटनाएं हो रही हैं। परन्तु न्याय मंदिर की सद्‌इच्छा को गोतस्कर/ गोकश अपनी ढाल बनाकर गोहत्या/ गोतस्करी रोकने वाले सज्जनों तथा कर्तव्यनिष्ठ राजकीयकर्मियों को मौत के घाट भी उतारने में कोताही नहीं बरत रहे हैं, यदि किसी की जान किसी भी प्रकार बच जाए तो ईश्वरीय कृपा होगी!

उच्च पदस्थ लोगों के सद्‌हेतु से दिए गए बयान तथा न्याय मंदिर की प्रतिष्ठा ऐसी बढती घटनाओं से सवालों के दायरे में आ रही है। बीएसएफ जवान/ अधिकारी की हत्या पर उच्चपदस्थ महानुभाव की बोलती बंद होना बताता है कि वे अपना मुंह अपनी सुविधा अनुसार खोलते हैं।

जम्मू–कश्मीर के कुपवाड़ा में बेकाबू भीड़ द्वारा बहाने से एक जवान की बेरहमी से पिटाई बताती है कि समुदाय विशेष बात–बेबात कानून को पैरों तले कुचलने पर आमादा हो जाता है क्योंकि उसे पता है कि कार्यपालिका/न्यायपालिका उस पर अपना जोर नहीं लगा सकती। नागरिकों का एक वर्ग भयभीत होकर उससे पीड़ित नागरिकों को ही संयम का पाठ पढ़ाएगा।

समीचीन होगा यदि न्याय मंदिर ऐसी घटनाओं का त्वरित संज्ञान लेकर गो रक्षकों/कर्तव्यनिष्ठ जवानों के विरुद्ध सुनियोजित षडयन्त्र को नेस्तानाबूत करते हुए कार्यपालिका को आदेश प्रदान करें।

मानवेन्द्र नाथ पंकज

(21अक्टूबर)

गोतस्करों का हमला : बीएसएफ का जांबाज अधिकारी शहीद

16 अक्टूबर को भारत–बांग्लादेश सीमा पर त्रिपुरा में तस्करों से मुठभेड़ के दौरान यूनिट कमांडर दीपक मंडल बुरी तरीके से जख्मी हो गए थे जिसके बाद उन्हें अस्पताल ले जाया गया। मंडल के सर पर गंभीर चोटें आई हुई थी और 4 दिन तक अस्पताल में चले उनके इलाज के बाद आखिरकार 20 अक्टूबर को वह शहीद हो गए।

शहीद दीपक मंडल त्रिपुरा में उस वक्त तैनाती में लगी बीएसएफ की यूनिट में भारत–बांग्लादेश सीमा पर बीएसएफ की 145 वीं बटालियन यूनिट कमांडर के रूप में तैनात थे। 16 अक्टूबर रात 2:00 बजे अचानक पशु तस्कर भारत से पशुओं को तस्करी के जरिए बांग्लादेश ले जाने की कोशिश करने लगे।

मंडल ने उन्हें रोकने की कोशिश की लेकिन वह नहीं रुके। आखिरकार मंडल अपनी गाड़ी से उतरे और उनकी गाड़ी के सामने आ गए जिसके बाद तुरंत तस्कर अपनी गाड़ी से नीचे उतरे और पहले उनपर डंडों से हमला किया, फिर उन्हें अपनी गाड़ी से कुचल दिया।

मंडल के बचाव में उनके बाकी के साथी आए। उन्होंने हवाई फायरिंग की तब जाकर तस्कर तितर–बितर हुए जिसके बाद मंडल को छुड़ाया जा सका। मंडल की हालत बेहद खराब थी और उन्हें फौरन कोलकाता ले जाया गया जहां चार दिन तक उनका इलाज चला।

शहीद मंडल अकेले ऐसे बीएसएफ के कर्मी नहीं है जिन पर तस्करों ने हमला किया है। **पिछले 1 साल में 80 से ज्यादा बार तस्करों ने ड्यूटी पर तैनात बीएसएफ के जवान और अधिकारियों पर हमला किया है।** बीएसएफ के पूर्व आईजी जे पी सिन्हा के मुताबिक इसकी खास वजह भारत सरकार की पॉलिसी भी है।

भारत सरकार बांग्लादेश के साथ अपनी दोस्ताना संबंध कायम रखना चाहती है जिस वजह से सुरक्षा बलों को निर्देश दिया जाता है कि भारत–बांग्लादेश सीमा पर गैर–कानूनी तरीके से आवाजाही करने वाले लोगों पर कम खतरनाक हथियार का प्रयोग किया जाए।

तस्कर भारत सरकार की इसी नीति का फायदा उठाते हैं, और फोर्स के जवानों और अधिकारियों पर जानलेवा हमला करने से नहीं चूकते। सिन्हा के मुताबिक भारत सरकार को अपनी इस नीति पर दोबारा विचार भी करना चाहिए।

बीएसएफ के पूर्व अधिकारी की ये बातें तस्करों की गाड़ी से बरामद हुए ईंट और डंडों से भी साबित होती हैं कि वे कितनी तैयारी से आए थे, इनके मंसूबे कितने खतरनाक थे।

(न्यूज 18, 20 अक्टूबर)

बेंगलुरु : गोहत्या रोकने की कोशिश कर रही महिला इंजीनियर पर भीड़ का हमला

बेंगलुरु की एक महिला इंजीनियर ने अवैध गोहत्या की शिकायत करने पर माफिया द्वारा मारपीट का आरोप लगाया है। एएनआई की रिपोर्ट के अनुसार, शहर के बाहरी इलाके तलघट्टापुरा में अवैध गोहत्या की सूचना उसने पुलिस को दी थी। पीड़िता की पहचान नंदिनी के रूप में हुई, उसने आरोप लगाया कि पुलिस ने गड़बड़ी की। नंदिनी का कहना है कि जब उसने घटना की जानकारी पुलिस को दी थी तब उससे वायदा किया गया था कि अवैध गाय माफिया के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। मगर ऐसा नहीं होने पर उसने खुद को 'फंसा' महसूस किया।

नंदिनी ने कहा, "हम उस इलाके में गए तो हमने बीफ की अवैध दुकानें देखीं। वहां 14 गायें बंधी थीं, जिनमें से दो बछड़ों को काटने के लिए पास ही एक छोटे कमरे में ले जाया जा रहा था। पशु–प्रेमी होने की वजह से हम तलघट्टापुरा के पुलिस थाने पहुंचे और शिकायत दर्ज कराई। हमें विश्वास दिलाया गया था कि कार्रवाई की जा रही है और इलाके में पुलिस भेजी गई है।"

नंदिनी ने एएनआई को आगे बताया, "जब हमें कोई अपडेट नहीं मिली तो मैं साथी शिकायतकर्ता और दो पुलिस कॉन्स्टेबल्स को लेकर अपनी कार में वहां गई। पुलिस की कोई गाड़ी उपलब्ध नहीं थी। वहां पहुंचने पर हमने देखा कि भीड़ इकट्ठा हुई है। जैसा हमें कहा गया था कि वहां पुलिस होगी, मगर वहां कोई नहीं था। मुझे ऐसा लगा कि मैं किसी जाल में फंस गई हूं। भीड़ ने हमपर ईंटें, बोल्डर और कांच की बोतलें बरसानी शुरु कर दीं और पाकिस्तान के पक्ष में नारे लगाने

शेष पृष्ठ 25 पर.....

राज्याभिषेक स्थल में सम्राट हेमचंद्र का स्मारक बनाने की माँग

नई दिल्ली, 7 अक्टूबर। इन्द्रप्रस्थ विश्व हिन्दू परिषद एवं इतिहास संकलन के तत्वावधान में सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य राज्याभिषेक समारोह द्वारा गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

मुख्य वक्ता संघ सह–सरकार्यवाह डा. कृष्ण गोपाल ने कहा कि सातवीं शताब्दी से अफ्रीका, यूरोप, मध्य एशिया के कई देशों में अधिकतम एक वर्ष की लडाई में इस्लामिक राजा आसानी से विजय हासिल कर रहे थे लेकिन भारत आने में उन्हें 350 वर्षों तक लड़ना पड़ा। दुनिया का स्वभाव और भारत का स्वभाव अलग है। अलेक्जेंडर जैसे राजा को भी भारत में आने के दौरान हार माननी पड़ी। 12वीं शताब्दी से 1947 तक हिन्दू संघर्ष करने रहे। आजादी के बाद वही इस्लामिक राजा आज सड़कों पर पंचर लगा रहा है।

उन्होंने कहा कि यदि भारत ने इस्लाम के बढ़ते कद को न रोका होता तो चीन, जापान, मंगोलिया सहित अन्य देशों में भी इस्लाम का कब्जा होता। उन्होंने 1767 में ब्रह्मपुत्र नदी में राम सिंह और असमी लोगों के युद्ध का जिक्र करते हुए कहा कि यह दुनिया का सबसे बड़ा नेवल युद्ध था जिसमें मुगल सेना को हार का सामना करना पड़ा।

इतिहास संकलन समिति के संगठन मंत्री बाल मुकुन्द ने कहा कि भारत का इतिहास महान है लेकिन हमारी इस नई पीढी को इसकी जानकारी ही नही है। हमें सरकार पर ही नही निर्भर रहना चाहिए। हमें अपने स्तर पर भी प्रयास कर लोगों को जागरूक करना होगा।

विहिप के सह– संगठन महामंत्री विनायकराव देशपाण्डे ने कहा कि हेमचन्द्र अंतिम हिन्दू राजा थे। उन्होंने अपनी अल्पावधि के शासन में भी दुश्मनों को परेशान कर दिया था। पानीपत में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। हमारे युवाओं में ऐसे राजाओं के बारे में जानकारी होनी चाहिए। उन्होंने केन्द्र सरकार और दिल्ली नगर निगम से मांग की कि सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य का राज्याभिषेक पुराने किला में जहां हुआ था वहां उनका अभिषेक स्मारक बनाना चाहिए। अगले वर्ष विश्व हिन्दू परिषद का कार्यक्रम पुराने किले में ही होगा और हमें उम्मीद है कि केन्द्र सरकार उनका स्मारक जरूर बनवायेगी। राजस्थान और हरियाणा सरकार ने हिन्दू राजाओं के तेज को प्रकट करने वाले स्मारक बनवाये हुए है।

विहिप–केन्द्रीय उपाध्यक्ष ओमप्रकाश सिंहल, क्षेत्रीय संगठन मंत्री करुणा प्रकाश, प्रो. चन्द्रकला पाणिया, चेयरमैन इंडियन इंस्टीट्यूट आफ एडवांस स्टडी शिमला, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत प्रचारक हरीश रावत, प्रांत मंत्री बचन सिंह, राष्ट्रीय कवि गजेन्द्र सोलंकी, इतिहास संकलन योजना समिति के महामंत्री डा. जगबीर सिंह, प्रांत उपाध्यक्ष बृज मोहन सेठी, प्रांत धर्म प्रसार प्रमुख रमेश शर्मा भी उपस्थित रहे।

dharmendra312@gmail.com

इलाहाबाद उच्च न्यायालय का आदेश, मदरसों में राष्ट्रगान गाया जाना अनिवार्य

राष्ट्रगान को लेकर इलाहाबाद हाई कोर्ट ने बड़ा आदेश दिया है। कोर्ट ने कहा कि मदरसों में राष्ट्रगान गाया जाना अनिवार्य है। हमें अपने राष्ट्रगान और राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे का सम्मान करना चाहिए। कोर्ट ने यह आदेश एक याचिका की सुनवाई करते हुए सुनाया है।

कोर्ट में मदरसों में राष्ट्रगान से राहत मिलने को लेकर एक याचिका दायर की गई थी। कोर्ट ने उसे ठुकराते हुए कहा कि राष्ट्रगान 'जन गण मन' गाया जाना अनिवार्य है। सभी को राष्ट्रगान और राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे का सम्मान करना चाहिए। (5 अक्टूबर) http://www.jansatta.com

केरल में अभिव्यक्ति को कुचलने के लिए राज्य प्रायोजित हिंसा!

केरल, जो विश्व में 'ईश्वर का अपना देश' नाम से विख्यात है, आज वह उस मानसिकता की जकड़ में फंसा हुआ है– जिसके दर्शन में रक्तपात, हिंसा और मानवाधिकारों को कुचलना निहित है। इसी विषाक्त दुष्चक्र के विरुद्ध केरल में भाजपा अध्यक्ष अमित शाह के नेतृत्व में जनरक्षा यात्रा जारी है।

केरल की सत्ता पर जब से (वर्ष 2016) पिनरायी विजयन के नेतृत्व में वामपंथी धड़े की वापसी हुई है, प्रदेश में एक बार फिर वाम हिंसा के साथ–साथ इस्लामी कट्टरवाद चरम पर पहुंच चुका है। जनरक्षा यात्रा के प्रारंभ होने से एक दिन पूर्व भाजपा के तीन कार्यकर्ताओं पर उस समय हमला कर दिया गया, जब वह नीलेश्वरम् बाजार में यात्रा हेतु अपनी तैयारियों में जुटे हुए थे। सत्तारुढ़ दल माकपा के लगभग 20 कार्यकर्ता इस हमले के आरोपी है।

केरल में विजयन सरकार के लगभग 17 माह के कार्यकाल में एक दर्जन से अधिक संघ–भाजपा कार्यकर्ताओं को विचारधारा के नाम पर मौत के घाट उतार दिया गया है, जिसमें चार कार्यकर्ता दलित समाज से थे। इन्ही चारों में राजेश एडवोकेड भी शामिल था, जिसकी हत्या इसी वर्ष 29 जुलाई की रात वैचारिक मतभिन्नता के कारण निर्दयता के साथ कर दी गई थी।

वर्ष 1957 से केरल में ईएमएस नंबूदरीपाद के कार्यकाल से 'लाल' आतंक का दौर जारी है और कन्नूर उसके लिए कुख्यात है। वाम शासन में अन्य विचार का पनपना– विशेषकर संघ की राष्ट्रवादी विचारधारा को अंगीकार करना, एक ऐसा अपराध है, जो ईश–निंदा से कमतर नहीं, जिसमें इस्लामी कट्टरपंथियों ने मौत ही एकमात्र सजा सुनिश्चित की है। जिस प्रकार आतंकी–जिहादी अपने नृशंस कृत्य को न्यायोचित ठहराने के लिए इस्लाम और कुरान को उद्धृत करते हैं, उसी तरह वैचारिक विरोधियों को कुचलने की शक्ति, वामपंथियों को अपने जनक मार्क्स और उनके चिंतन से प्राप्त होता है, जिसका आधार ही हिंसा, प्रतिरोध और असंतोष है।

वास्तव में, वर्गभेद मिटाने के लिए वामपंथी जिस क्रांति का यशोगान करते हैं, उसकी आधारशिला में ही लाखों वैचारिक विरोधियों की लाशें और आवाज दबी हुई है। यहां एक नेता और एक ही विचार पर विश्वास रखने का सिद्धांत है। जो असहमत है, उन्हें मत रखने की स्वतंत्रता तो छोड़िए, उसे जीवन के अधिकार से भी वंचित कर दिया जाता है। यही कारण है कि विश्व के जिस भूखंड को मार्क्सवादी विचारधारा ने छुआ– वहां न केवल रक्तरंजित राजनीति और हिंसा की नींव पड़ी, साथ ही उस क्षेत्र की सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्थाओं को भी कुचल दिया गया। रूस (सोवियत संघ) से लेकर चीन, पूर्वी यूरोपीय देशों, कोरिया, कंबोडिया इत्यादि इसके प्रत्यक्ष उदाहरण है। स्वतंत्र भारत में प.बंगाल, केरल और त्रिपुरा इसकी चपेट में है।

केरल के वाम शासन में न केवल वैचारिक विरोधियों की हत्याएं बढ़ी है, साथ ही उनके और स्वघोषित सेकुलरिस्टों के वमनजनक आशीर्वाद से इस्लामी कट्टरवाद भी समाज के तानेबाने को प्रभावित कर रहा है। 23 वर्षीय कासरगोड़ निवासी अथिरा इसी गठजोड़ की शिकार हुई है। अथिरा नाम की युवती ने जुलाई में अपना घर छोड़ने और मतांतरण के बाद इस्लाम अपना लिया था– वह स्वेच्छा से अपने मूल समाज में लौट आई है। माता–पिता द्वारा न्यायालय का दरवाजा खटखटाने के बाद अथिरा पुनः अपनों के बीच पहुंची है।

अथिरा के अनुसार, उसके सभी दोस्त मुस्लिम थे, जो उसे हिंदू समाज की खामियां गिनवाकर कहते थे कि कैसे किसी पत्थर की पूजा करके मदद की उम्मीद की जा सकती है, जबकि इस्लाम में केवल एक अल्लाह है। अथिरा को

वाम विचारधारा और जिहादी मानसिकता– दोनों ने रक्तरंजित दर्शन के कारण हजारों–लाखों निरपराधों का खून बहाया और मानवता का गला घोंटा है। यही स्वाभाविकता उन्हे एक–दूसरे के निकट लाती है।

जाकिर नाइक के भाषण सुनाए जाते, जिसमें यह तर्क दिया जाता था कि इस्लाम को छोड़कर अन्य सभी मत गलत हैं। बात अथिरा तक ही सीमित नहीं है। यहां निमिशा (फातिमा), मैरिन (मरीयम) और अखिला (हादिया) जैसी कई युवतियां लव–जिहाद के माध्यम से मतांतरण का शिकार हुई है। केरल में मुस्लिम समाज का एक बड़ा वर्ग कट्टर सलाफी या वहाबी विचाराधारा को मानता हैं। आई.एस में शामिल हुए केरल के अधिकतर मतांतरित युवा भी इसी के अनुयायी है।

केरल की जनसांख्यिकीय स्थिति में व्यापक परिवर्तन आया है। 1901 में यहां हिंदुओं की संख्या 68.9 प्रतिशत थी, वह 2011 में घटकर 54.7 प्रतिशत हो गई। कालांतर में जहां मुस्लिम 1901 में 17.28 प्रतिशत थे, वह 2011 में बढ़कर 26. 56 प्रतिशत हो गए। 117 वर्षों में केरल में ईसाई आबादी में भी वृद्धि हुई है।

वाम विचारधारा और जिहादी मानसिकता– दोनों ने रक्तरंजित दर्शन के कारण हजारों–लाखों निरपराधों का खून बहाया और मानवता का गला घोंटा है। यही स्वाभाविकता उन्हे एक–दूसरे के निकट लाती है। स्वतंत्रता से पहले पाकिस्तान के निर्माण की मांग का समर्थन, इसका प्रमाण है। उस कालखंड में मुस्लिम लीग को छोडकर केवल वामपंथियों के राजनीतिक समूह ही ऐसा था, जो पाकिस्तान के संस्थापक सदस्यों में से एक था। स्वतंत्रता के बाद जहां केरल में दिवंगत वामपंथी मुख्यमंत्री ईएमएस नंबूदरीपाद ने मुस्लिम बहुल एक नए जिले मल्लापुरम का सृजन किया, वहीं वर्तमान में पी.विजयन सरकार में केरल की सड़कों का नामकरण गाजा पट्टी के नाम पर हो रहा है।

वामपंथियों के अतिरिक्त कांग्रेस की क्षुद्र राजनीति के कारण भी केरल में इस्लामी कट्टरता भयावह स्थिति में पहुंची है। भारत की स्वतंत्रता के पश्चात 10 मार्च 1948 में इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग (आई.यू.एम.एल.) की स्थापना हुई। दिवंगत समाजवादी नेता पट्टम थानु पिल्लै की तत्कालीन सरकार को गिराने के लिए कांग्रेस ने कट्टरवादी मुस्लिम लीग का ही सहारा लिया था। इस गठजोड़ का बचाव करते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित नेहरु ने कहा था कि केरल की मुस्लिम लीग राष्ट्रवादी संगठन है।

यही नहीं, कट्टरवादी संगठन पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी के संस्थापक अब्दुल नासेर मदनी, वर्ष 1998 के कोयंबटूर बम धमाकों के आरोप में वर्ष 2006 में जब तमिलनाडु की जेल में बंद था, तब 16 मार्च 2006 को होली की छुट्टी के समय केरल विधानसभा का विशेष सत्र बुलाया गया, जिसमें कांग्रेस–वामपंथियों के कुत्सित सहयोग ने मदनी को पैरोल पर रिहा करने का प्रस्ताव पारित किया था।

भारत की अखंडता के विपरीत उसके स्वतंत्र अस्तित्व को नकारने, 1962 में चीनी आक्रमण का स्वागत करने वाले और गांधीजी, सुभाषचंद्र बोस आदि नेताओं को गालियां देने वाले वामपंथी आज भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में हाशिए पर है। अपने शेष राजनीतिक अस्तित्व को बचाने के लिए वह त्रिपुरा और केरल में हिंसा व अत्याचार की हदें पार कर रहे हैं। मार्क्सवादी भूल जाते है कि विचारधारा का मुकाबला विचारधारा से किया जा सकता है; ना कि नृशंस हत्या के बल पर। (7अक्टूबर)

https://www.nayaindia.com

हिन्दी के लिए सरसंघचालक जी से अपील

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

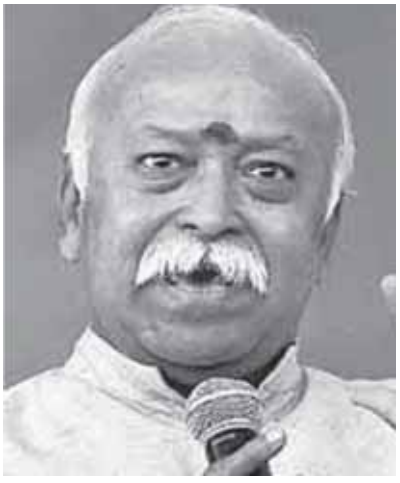

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अ.भा. कार्यकारी मंडल की बैठक आजकल भोपाल में हो रही है। यहां गैर–हिंदीभाषी क्षेत्रों के प्रचारकों की विशेष बैठक बुलाई गई है। इस बैठक में सर संघचालक मोहन भागवत इन प्रचारकों को 'मातृभाषा अभियान' चलाने की प्रेरणा देंगे याने प्राथमिक शाला के बच्चों को अंग्रेजी की चक्की में पिसने से बचाएंगे। देश के बच्चों की प्राथमिक शिक्षा मातृभाषाओं में हो, इस पर प्रचारक जोर देंगे।

आज भारत का गरीब से गरीब आदमी चाहता है कि उसके बच्चे पढ़ लिखकर बडी–बडी नौकरियां करें। हमारे देश में सरकारी नौकरियों के लिए सबसे बड़ी और अनिवार्य योग्यता क्या है? अंग्रेजी भाषा ! आपको अपनी नौकरी का हर गुर अच्छी तरह मालूम है लेकिन अगर आप अंग्रेजी नहीं जानते तो वह नौकरी आपको नहीं मिलेगी। सरकारी ही नहीं, निजी नौकरियों में भी इसी की नकल चल पड़ी है। इसीलिए संघ–प्रचारकों के उपदेश चिकने घड़े पर से फिसल जाएंगे। अतः मोहनजी अपना समय और शक्ति इस उपदेश–कथा में नष्ट नहीं करें। इसकी बजाय वे तीन काम करें।

सबसे पहले सर्वज्ञजी से कहें कि वे संसद में ऐसा कानून लाएं, जिससे देश में विदेशी भाषा के माध्यम की हर पढ़ाई पर प्रतिबंध लगे। सिर्फ प्राथमिक शिक्षा में ही नहीं, पीएच.डी. में भी। अब से 50 साल पहले मैंने अंतरराष्ट्रीय राजनीति में पीएच.डी. का शोधप्रबंध लिखकर (ज.नेहरु वि.वि. में) भारतीय भाषाओं के बंद द्वार खोल दिए थे। इसका अर्थ यह नहीं कि हम विदेशी भाषाएं न पढ़ें। स्वेच्छा से अनेक विदेशी भाषाएं पढ़ें और उनमें महारत हासिल करें। मैंने स्वयं रुसी, जर्मन और फारसी पढ़ी।

अंग्रेजी तो मुझ पर बचपन से ही लदी हुई थी। स्वेच्छा से अंग्रेजी पढ़ने में कोई बुराई नहीं है। दूसरा काम सरकार यह करे कि सरकारी नौकरियों की भर्ती–परीक्षा से अंग्रेजी की अनिवार्यता खत्म करे। तीसरा काम, जो संघ के स्वयंसेवक करें, वह यह कि सरकार संघ की बात न माने तो लाखों स्वयंसेवक सारे देश में अहिसक सत्याग्रह करें, धरने दें, उपवास करें, प्रदर्शन करें।

वे अंग्रेजी माध्यम की शालाओं को बंद करवाएं, सरकारी दफ्तरों और नेताओं की गर्दन नापें और देश के सारे काम–काज में स्वभाषाओं को प्रतिष्ठित करें। अब से साढ़े तीन साल पहले मैंने सब स्वभाषा में हस्ताक्षर करें, ऐसा अभियान चलाया था।

मोहनजी ने बेंगलूरु में संघ के विराट सम्मेलन में समस्त स्वयंसेवकों से मेरा नाम लेकर संकल्प करवाया था। मैं उनका आभारी हूं। उस अभियान को आगे बढ़ाना है। कम से कम दस करोड़ लोगों के दस्तखत अंग्रेजी से बदलवाकर हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में करवाना है। यह छोटी–सी लेकिन महत्वपूर्ण शुरुआत है। कम से कम इतना तो करें। (9 अक्टूबर)

गोधरा फैसले के खिलाफ उच्च न्यायालय में चुनौती दे गुजरात सरकार: डॉ0 तोगड़िया

"हिन्दुओं को नहीं मिला न्याय"

नई दिल्ली। विश्व हिंदू परिषद के प्रमुख डॉ0 प्रवीण तोगड़िया ने आज कहा कि गोधरा ट्रेन कांड में दोषियों की मौत की सजा को बदलकर उम्र कैद में बदले जाने के गुजरात उच्च न्यायालय के फैसले को गुजरात सरकार को शीर्ष अदालत में चुनौती देनी चाहिए। वर्ष 2002 के इस मामले में दोषियों को मौत की सजा देने की मांग करते हुए उन्होंने कहा कि राज्य सरकार को भगवान राम के भक्तों को न्याय दिलाने के लिए दीवाली से पहले उच्चतम न्यायालय में अपील करनी चाहिए।

डॉ0 तोगड़िया ने कहा कि उन जिहादियों को फांसी पर क्यों नहीं लटकाया जाना चाहिए जिन्होंने एक साजिश के तहत गोधरा में हिंदुओं को जलाया था। यह उनकी शहादत का अपमान है। यह भी कहा कि हिंदुओं को मूल न्याय भी नहीं मिल रहा है। गुजरात उच्च न्यायालय ने गोधरा ट्रेन नरसंहार मामले में आज 11 दोषियों की सजा–ए–मौत को उम्रकैद में बदल दिया जबकि 20 अन्य दोषियों को सुनायी गयी उम्रकैद की सजा को बरकरार रखा। अदालत ने कहा कि राज्य सरकार और रेलवे दोनों कानून–व्यवस्था बनाए रखने में असफल रहे हैं और दोनों पीड़ित परिवारों को मुआवजा देंगे।

http://m.punjabkesari.in

विनम्रता व बल के समुच्चय दीनदयाल उपाध्याय

राजनाथ सिंह 'सूर्य'

जिस व्यक्ति ने ग्रीष्मकालीन यत्र–तत्र जल वाली नदी को ही देखा हो उससे अत्यंत विस्तृत और गहरे सागर की समझ की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से ही भारतीय वैचारिक जगत में सनातन अवधारणा के स्थान पर पाश्चात्य चिंतकों विशेषकर कार्ल मार्क्स की सामाजिक चेतना और अधिक संरचना की अवधारणा–जो आचरण में वर्ग संघर्ष और सिद्धांत के रूप में संघर्ष को परिभाषित करती थी, हावी होती गई।

यह माना जाने लगा कि उपभोग के बंटवारे के संतुलन के लिए संघर्ष एकमात्र मार्ग है और जीवन का उद्देश्य उपभोग में बराबरी होना चाहिए। योरोप की औद्योगिक क्रांति के समय इस वर्ग संघर्ष के तर्क ने भौतिक भूख के लिए संघर्ष को एकमात्र मार्ग मान कर प्राचीनकालीन साम्राज्यवाद को एक नया आयाम दिया–आर्थिक साम्राज्यवाद, जो दो रूप में प्रकट हुआ–पूंजीवाद और समाजवाद में।

पूंजी की प्राथमिकता पर आधारित इन अवधारणाओं में मात्र शाब्दिक अंतर है। दोनों में एक ही तथ्य काम करता है पूंजी की प्राथमिकता और नियंत्रण में सीमित लोगों की भूमिका। भारतीय समाज रचना में इस सोच की समझदारों के प्रयास से की जाने वाली पैठ के बावजूद सनातन अवधारणा अर्थात् जो कुछ है वह ईश्वरीय निर्मित है। सभी में ईश्वरीय वास है। इसलिए इसका उपयोग त्याग के साथ करना चाहिए।

अन्त्योदय की अवधारणा

ईषोपनिषद ''त्येन तक्तेन भुंजीथः'' से जिस अवधारणा को समझाने का प्रयास किया गया है वह सम्पदा पर अधिकार की नहीं ट्रस्टी भावना पर आधारित है। जो कुछ हम अर्जित करते हैं, उसमें हम ट्रस्टी हैं, उपभोक्ता नहीं, उपभोक्ता पूरा समाज है। अन्त्योदय की जिस अवधारणा को पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने हमारे नियोजन का आधार माना है, वह इसी सनातन वैचारिक और आचरणीय चलन की परिपुष्टि से समतायुक्त ममतामयी संरचना का मार्ग प्रशस्त करता है। उनके द्वारा व्याख्यायित जिसे एकात्म मानवदर्शन कहा गया है, वह उपनिषद की'' ''यदकिंचित जगत्याम् जगत'' ईसा वास्य मिदम् सर्वम्'' के संदेश पर आधारित विचार है। उन्होंने एकात्ममानव को 'वाद' के रूप में कभी परिभाषित नहीं किया। क्योंकि ईश्वरीय व्याप्त किसी वाद पर आधारित विचार नहीं हो सकता। इस एकात्म मानव की अवधारणा में प्रति के साथ तादात्म्य का आग्रह निहित है और प्रकृति से साथ इसी तादात्म को हमारे ऋषियों ने अध्यात्म्य कहा है।

अध्यात्म नए शोषणरहित समतायुक्त समाज संरचना का आधार हो सकता है जो भौतिक भूख की पाश्चात्य अवधारणा से प्रकृति के पोषण में होड़ से विनाश विभिषिका के प्रति सतर्क है उनको एकात्म मानव की अवधारणा सम्बल प्रदान कर रही है। अर्थ और काम का सोचयुक्त पाश्चात्य दर्शन उस नदी समान है जिसमें यत्र तत्र ही जल दिखाई देता है, भारतीय सोच धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पर आधारित होने के कारण ही सनातन है। दीनदयालजी के विचारों को समझने के लिए रचना की प्राचीन भारतीय अवधारणा को समझना जरूरी है।

जैसा मैंने प्रारम्भ में कहा है यत्र, तत्र बिखरे जल वाली नदी को जिसने देखा है, वह सागर की विशालता की कल्पना भी नहीं कर सकता, वैसे ही पाश्चात्य की भौतिकता पर आधारित संकुचित विचारधारा को ही सब कुछ समझने वाले वैचारिक भारत की उस समिष्टव्यापी अवधारणा को समझने में असफल है जिसे दीनदयाल जी ने एकात्म दर्शन के रूप में समझाने का प्रयास किया है। पूंजी आधारित पूंजीवाद या समाजवाद की सीमित पैठ से जो ओतप्रोत है, जिन्होंने मनुष्य की तुलना 'एनीमल' से की है, वे धर्मोहिताषाम् अधिको विषेषय्म् को नहीं समझ सकते। **धर्म अर्थात् कर्त्तव्य प्रधान अवधारणा युक्त इसी जीवनशैली को नियोजन का आधार बनाने का मंत्र दीनदयालजी ने 'अन्त्योदय के रूप में प्रतिपादित किया है।**

मिट्टी की दीवार और खपरैल की छत वाली एक कोठरी के मकान में जन्म लेने वाले दीनदयाल उपाध्याय महज 51 वर्ष की आयु में हमारे बीच से चले गए। इन इक्वायन वर्षों में से लगभग 30 वर्ष उन्होंने सामाजिक कार्यकर्ता, राजनीतिक नेता और आर्थिक विकास की सम्यक दृष्टि प्रदानकर्ता के रूप में

दीनदयाल जी ने कहा–जिससे हमारे विचार नहीं मिलते या किसी मसले पर मत भिन्नता है, इसलिए हम उस व्यक्ति की देशभक्ति पर सवाल खड़ा करें यह अनुचित है कल को हो सकता है, वही व्यक्ति हमारे साथ खड़ा हो!

बिताए हैं। मैंने सबसे पहले 1947 में उन्हें फैजाबाद में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक समारोह में देखा था। मुझे मालूम नहीं वे क्या बोले थे, पर हमारे गांव के वरिष्ठजनों की उक्ति से कि लड़का पते की बात कह रहा था, मुझे उनकी कम आयु में संज्ञान अभिव्यक्ति का आभास लगा। 1954 में जब वे पुनः फैजाबाद में ही जनसंघ की एक सभा को संबोधित करने के लिए आए, मुझे उनकी सेवा में रहने का अवसर मिला।

ज्ञान की गहराई

1952 से संघ शिक्षा वर्ग, और पुनः पत्रकार के रूप में जनसंघ के आयोजनों में सुनने, पांचजन्य, आर्गनाईजर में पढ़ने या उनके साथ बैठने का अवसर मिलते रहने पर उनकी सहजता में व्यक्त विचारों का चिंतन करने पर बहुत कुछ आभास हुआ। उनकी साधारण वेषभूषा और रहन–सहन को देखकर उनके ज्ञान की गहराई का अनुमान लगाना तो संभव ही नहीं था, उनके विचार में पैठ करने की कोशिश अभी और आगे है की स्थिति में डाल देता है, वैसा ही कुछ जैसा **नेति–नेति** अर्थात् इसके आगे क्या है की जिज्ञासा वेदों में उल्लेख से मिलती है।

दीनदयालजी संघ शिक्षा वर्ग में प्रायः संघ प्रार्थना पर ही व्याख्यान देते थे जिसकी एक पंक्ति में ईश्वर से ऐसा बल मांगा कि हम अजेय रहे और ऐसी विनम्रता जिसके सामने विश्व नतमस्तक हो जाये। दीनदयाल जी इसी बल और विनम्रता के समुच्चय थे। उन्होंने प्रथम और द्वितीय पंचवर्षीय योजना जो समाजवाद के सिद्धांत पर आधारित थी, की जो समालोचना की थी, उसको पढ़कर प्रसिद्ध समाजवादी विचारक सम्पूर्णानन्द ने प्रशंसायुक्त शब्दों में भूमिका लिखी थी। दीनदयालजी वाद या विवाद में स्वयं को सही ठहराने के पूर्वाग्रही आचरण के बजाय संवाद वाली सनातन भारतीय जीवनशैली को अपनाने पर बल दिया करते, जो पूर्वाग्रह के बजाय एक दूसरे को समझने और समझाने में सहायक होता है जिसमें संशोधन परिवर्धन और उदार बने रहने की प्रेरणा निहित है। वाद और विवाद में दुराग्रह होने का परिणाम ही अराजकता फैला रहा है।

मन भिन्नता नहीं; मत भिन्नता

राजनीतिक या वैचारिक मतभेद में संतुलनयुक्त अवधारणा की उस भारतीय परंपरा को उन्होंने आगे बढाने का प्रयास किया, जो सर्वधर्म सम्भाव पर आधारित है। भारत के ऋषियों ने न तो किसी अवधारणा को अंतिम माना और न किसी को तिरस्कृत। यही कारण है कि केवल भारत ही दुनिया का एकमात्र देश है जहां अनगिनित अवधारणाओं का अस्तित्व विद्यमान है। विपरीत मतों के प्रति उनकी सोच की समझ के लिए एक घटना का विवरण दे रहा हूं।

अध्यात्म नए शोषणरहित समतायुक्त समाज संरचना का आधार हो सकता है जो भौतिक भूख की पाश्चात्य अवधारणा से प्रकृति के पोषण में होड़ से विनाश विभिषिका के प्रति सतर्क है उनको एकात्म मानव की अवधारणा सम्बल प्रदान कर रही है।

यह घटना 1965 के भारत–पाकिस्तान युद्ध के पूर्व की है। इस युद्ध में भारत के वीर सैनिकों ने अमेरिका से प्राप्त पैंटन टैंकों की खेमकरण में जैसी दुगर्ति की थी वह बेमिसाल थी। पंडित दीनदयालजी उत्तर प्रदेश जनसंघ के लखनऊ के खुर्शीदबाग स्थित कार्यालय के बाहर चारपाई पर बैठे कुछ लिख रहे थे। हम कुछ स्वयंसेवक पत्रकार उनसे मिलने पहुंच गए।

उन्होंने लिखना बंद कर हमसे बातचीत शुरु कर दी। उनके लखनऊ आगमन पर प्रायः हम उनसे मिलने पहुंच जाते थे, घंटों बातचीत होती थी, लेकिन उस बातचीत को समाचार बनाने का न उन्होंने कभी आग्रह किया और न ही हमने ही उपयोग किया। हम पंडित जी की बातें सुन रहे थे, उसी बीच पांचजन्य के तत्कालीन संपादक श्री वचनेश त्रिपाठी आ गए। संघ के खांटी स्वयंसेवक होने के साथ ही वे स्वतंत्रता संग्राम में शहीद होने वाले चन्द्रशेखर आजाद आदि के नजदीकी होने के कारण वैचारिक उग्रता के प्रतीक भी थे।

उनके आते ही पंडित जी ने हास–परिहास शुरु कर दिया। पहली चर्चा शुरु हुई। यज्ञोपवीत (जनेऊ) पहनने पर जो कब सहमति और असहमति में व्यक्तिगत अवधारणा पर पहुंच गई, इसका हमें पता ही नहीं चला। एकाएक दीनदयाल ने वचनेश जी से कहा कि कुछ दिन पूर्व जयप्रकाश नारायण जी मिले थे, वे बड़े दुखी थे कि पांचजन्य ने उन्हें देशद्रोही लिखा है। 1965 युद्ध के पूर्व जयप्रकाश जी भारत के प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री के प्रतिनिधि बनकर पाकिस्तान के हुक्मरान याहिया खां से बातचीत के लिए गए थे। उनकी वार्ता का कोई परिणाम नहीं निकला। उनके पाकिस्तान जाने को लेकर दिल्ली में विरोध प्रदर्शन भी हुए थे।

उस विरोध प्रदर्शन का समाचार पांचजन्य में छपा था, जिसमें जयप्रकाशजी के पाकिस्तान जाने पर देशद्रोही करार दिया गया था। दीनदयाल जी ने इसी का हवाला देकर वचनेशजी से चर्चा की। वचनेशजी पांचजन्य में व्यक्त विचार पर दृढ थे। उनका मत था कि जयप्रकाशजी का यहियां खां से मिलने जाना देशद्रोह की श्रेणी में आता है। पंडितजी ने हंसकर कहा–तो आपको चाहिए था कि प्रधानमंत्री को देशद्रोही कहते जिन्होंने भेजा था। लेकिन वचनेशजी टस से मस नहीं हुए। तब दीनदयाल जी ने कहा–जिससे हमारे विचार नहीं मिलते या किसी मसले पर मत भिन्नता है, इसलिए हम उस व्यक्ति की देशभक्ति पर सवाल खड़ा करें यह अनुचित है कल को हो सकता है, वही व्यक्ति हमारे साथ खड़ा हो!

शेष पृष्ठ 25 पर...

एक छोटा–सा गुट कट्टर सुन्नी इस्लाम को मानता है जिसे सलफी मुस्लिम कहते हैं, लेकिन इसकी गतिविधि ने राज्य के अन्य धर्मों के लोगों की जिंदगी मुश्किल में डाल दी है। इस राज्य में राज्य सरकार की नीति के तहत अरब और खाड़ी देशों का दखल ज्यादा है।

अस्तित्व बचाने के लिए झुकते हिन्दू

गतांक से आगे....

केरल में हिन्दू

केरल एक ऐसा राज्य है जहां देश में सबसे पहले ईसाई धर्म और बाद में मुस्लिम धर्म ने दस्तक दी। देश का पहला चर्च और पहली मस्जिद केरल में ही है। दोनों ही धर्मों के बीच हिन्दू आबादी को धर्मान्तरित करने का लक्ष्य था, जो अब तक जारी है। केरल में हिन्दू आबादी के विघटन के बाद यहा मिलीजुली संस्कृति निर्मित हो गई। इसके चलते ही इस भारतीय राज्य में वामपंथी वर्चस्व बढ़ गया। केरल को भारत का सबसे गरीब (?)लेकिन सबसे शिक्षित राज्य माना जाता रहा है।

केरल में 300 वर्ष पहले तक 99 प्रतिशत हिन्दू रहते थे। वर्तमान में केरल की कुल 3.50 करोड़ आबादी का 54.7 प्रतिशत भाग ही हिन्दू हैं जबकि 26.6 फीसदी मुस्लिम और 18.4 प्रतिशत ईसाई हैं। केरल में आबादी का संतुलन खासकर ईसाई मिशनरियों ने बिगाड़ा। हिन्दुओं का धर्मांतरण कर वहां की आबादी में कट्टरपंथी मुस्लिमों और वामपंथियों को वर्चस्व की भूमिका में ला खड़ा किया। 2011 की धार्मिक जगनणना के आंकड़ों अनुसार हिन्दुओं की आबादी 16.76 प्रतिशत की दर से तो मुस्लिमों की आबादी 24.6 प्रतिशत की दर से बढ़ी। पहली बार हिन्दुओं की आबादी वहां 80 प्रतिशत से नीचे आ गई। 2001 में हिन्दू 80.5 प्रतिशत थे, जो घटकर 79.8 प्रशित रह गए जबकि मुस्लिमों की आबादी 13.4 प्रतिशत से बढ़कर 14.2 प्रतिशत हो गई।

एक छोटा–सा गुट कट्टर सुन्नी इस्लाम को मानता है जिसे सलफी मुस्लिम कहते हैं, लेकिन इसकी गतिविधि ने राज्य के अन्य धर्मों के लोगों की जिंदगी मुश्किल में डाल दी है। इस राज्य में राज्य सरकार की नीति के तहत अरब और खाड़ी देशों का दखल ज्यादा है। बाहरी दखल के चलते केरल के शांतिप्रिय मुस्लिम भी अब कट्टरता की राह पर चल पड़े हैं। वर्तमान में केरल के मल्लापुरम, कासरगोड, कन्नूर और पलक्कड़ ऐसे क्षेत्र हैं, जहां मुस्लिमों का जोर चलता है। यहां हिन्दू और ईसाई दबाव में रहते हैं।

आंकड़ों के मुताबिक राज्य में साल 2015 में जन्मे कुल 5,16,013 जिंदा बच्चों में से 42.87 प्रतिशत हिन्दू समुदाय से, 41.45 प्रतिशत मुस्लिम समुदाय और ईसाई समुदाय से 15.42: थे। साल 2006 में मुसलमानों की जन्म दर 35 प्रतिशत से बढ़कर 2015 में बढ़कर 41.45 हो गई। 2006 में हिन्दू समुदाय ने 46 प्रतिशत की जन्म दर दर्ज की, जो 10 वर्षों में घटकर 42.87 प्रतिशत रह गई। ईसाई जन्म दर, जो हमेशा 20 प्रतिशत से नीचे थी, 2006 में 17 प्रतिशत से 2015 में 15.42 प्रतिशत हो गई। 9 साल की अवधि के दौरान मुस्लिम जन्म दर में केवल 2 बार गिरावट आई है। 2007 में यह 35 प्रतिशत (2006) से 33.71 प्रतिशत तक फिसल गई। (एजेन्सियां) **समाप्य**

साभार : वेब दुनिया

पूर्वोत्तर राज्यों में गोमांस पर प्रतिबंध नहीं : भाजपा

भाजपा ने आज यह कहते हुए कि मेघालय में गोमांस पर प्रतिबंध नहीं होगा ,आरोप लगाया कि कांग्रेस अगले वर्ष होने वाले चुनाव से पहले राजनीतिक लाभ हासिल करने के लिए इस मुद्दे पर लोगों को ''गुमराह'' कर रही है।

राज्य भाजपा के अध्यक्ष शिबुन लिंगदोह ने कहा कि केंद्र ने मेघालय में गोमांस पर प्रतिबंध नहीं लगाया है। उन्होंने आरोप लगाया कि 23 मई की अधिसूचना में पशु बाजारों को नियमित किए जाने की बात है जिसमें पशु बाजारों के कामकाज और व्यापार के

शेष पृष्ठ 15 पर.....

मोटर साइकिल रैली

इटावा, (उ.प्र.) 8 अक्टूबर। विश्व हिन्दू परिषद की युवा इकाई बजरंग दल इटावा के सह–संयोजक अनुराग भदौरिया के नेतृत्व में बजरंग दल के तैंतीसवें स्थापना दिवस पर उत्साही कार्यकर्ताओं ने फर्रुखाबाद रेलवे फाटक से जय श्रीराम के नारे लगाते हुए पक्का तालाब तक मोटर साइकिल रैली निकाली।

ankitacomputers.143@gmail.com

महानदी की सभ्यता

सिंधु सभ्यता से भी प्राचीन?

अनिरुद्ध जोशी ''शतायु''

मानव सभ्यता का उद्भव और संस्कृति का प्रारंभिक विकास नदी के किनारे ही हुआ है। छत्तीसगढ़ और उड़ीसा की सबसे बड़ी नदी महानदी का प्राचीन नाम चित्रोत्पला था। इसके अलावा इसे महानंदा और नीलोत्पला के नाम से भी जाना जाता है।

महानदी का उद्गम रायपुर के समीप धतरी जिले में स्थित सिहावा नामक पर्वत से हुआ है। इस नदी का प्रवाह दक्षिण से उत्तर की ओर है। इस नदी को 'छत्तीसगढ़ की गंगा' भी कहा जाता है। छत्तीसगढ़ में कई ऐसे क्षेत्र हैं जहां दस हजार वर्ष पूर्व प्राचीन सभ्यता होने के प्रमाण मिले हैं। अबूझमाड़ के जंगल की गुफाएं हो या लीलर–अरौद जैसे तट पर बसे प्राचीन स्थान।

दक्षिण कोशल

प्राचीन काल में छत्तीसगढ़ को दक्षिण कोशल के नाम से जाना जाता था। इस क्षेत्र का उल्लेख रामायण और महाभारत में भी मिलता है। यह दंडकारण्य वन का एक हिस्सा था। अत्रि ऋषि के आश्रम में कुछ दिन रुकने के बाद श्रीराम ने मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के घने जंगलों को अपना आश्रय स्थल बनाया था। यह जंगल क्षेत्र था दंडकारण्य। दंडक राक्षस के कारण इसका नाम दंडकारण्य पड़ा। दंडकारण्य में महानदी और गोदावरी बहती है। वर्तमान में करीब 92,300 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैले इस इलाके के पश्चिम में अबूझमाड़ पहाडियां तथा पूर्व में इसकी सीमा पर पूर्वी घाट शामिल हैं। दंडकारण्य में छत्तीसगढ़, ओडिशा एवं आंध्र प्रदेश राज्यों के हिस्से शामिल हैं। इसका विस्तार उत्तर से दक्षिण तक करीब 320 किमी तथा पूर्व से पश्चिम तक लगभग 480 किलोमीटर है।

अत्रि–आश्रम से दंडकारण्य आरंभ हो जाता है। छत्तीसगढ़ के कुछ हिस्सों पर श्री राम के नाना और कुछ पर बाणासुर का राज्य था। यहां की नदियों, पहाड़ों, सरोवरों एवं गुफाओं में राम के रहने के सबूतों की भरमार है। यहीं पर राम ने अपना वनवास काटा था। यहां वे लगभग 10 वर्षों से भी अधिक समय तक रहे थे।

इसी दंडकारण्य का ही हिस्सा है आंध्र प्रदेश का एक शहर भद्राचलम्। गोदावरी नदी के तट पर बसा यह शहर सीता–रामचंद्र मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। यह मंदिर भद्रगिरि पर्वत पर है। कहा जाता है कि श्रीराम ने अपने वनवास के दौरान कुछ दिन इस भद्रगिरि पर्वत पर ही बिताए थे।

मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ क्षेत्रों में नर्मदा व महानदी नदियों के किनारे 10 वर्षों तक उन्होंने कई ऋषि आश्रमों का भ्रमण किया। दंडकारण्य क्षेत्र तथा सतना के आगे वे विराध सरभंग एवं सुतीक्ष्ण मुनि आश्रमों में गए। बाद में सतीक्ष्ण आश्रम वापस आए। पन्ना, रायपुर, बस्तर और जगदलपुर में कई स्मारक विद्यमान हैं। उदाहरणतरू मांडव्य आश्रम, श्रृंगी आश्रम, राम–लक्ष्मण मंदिर आदि।

छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले में महानदी के किनारे ही सभ्यता का विकास हुआ। महानदी के रेत के नीचे हजारों साल का इतिहास दफन है। अरौद में महापाषाण काल का श्मशान घाट और महानदी के किनारे चट्टाननुमा बंदरगाह मिलने के बाद भी इस क्षेत्र की व्यापक खुदाई नहीं की गई। इसलिए जमींदोज हो चुकी प्राचीन सभ्यता के रहस्य से पर्दा नहीं उठ पा रहा है। अभी तक स्पष्ट नहीं हो पाया है कि धमतरी जिले की सभ्यता कितनी पुरानी है।

जिला मुख्यालय से 20 किमी दूर महानदी से लगा ग्राम अरौद है। पुरातात्विक महत्व के ग्राम लीलर, दरगहन और सलोनी भी महानदी तट पर इसी रोड में पड़ते हैं। इन गांवों में अब तक ज्ञात 3 हजार साल पुरानी सभ्यता का इतिहास दबा पड़ा है। महानदी किनारे अरौद के बंदरगाहनुमा चट्टान का निरीक्षण करने के बाद अधिकांश पुरातत्ववेत्ताओं और शोधकर्ताओं ने महानदी की रेत में बड़े–बड़े चट्टानों को देखकर इसे प्राचीन काल का छोटा बंदरगाह करार दिया था।

उनका तर्क था कि यहां छोटे–छोटे नाव ठहरते थे। 3 हजार

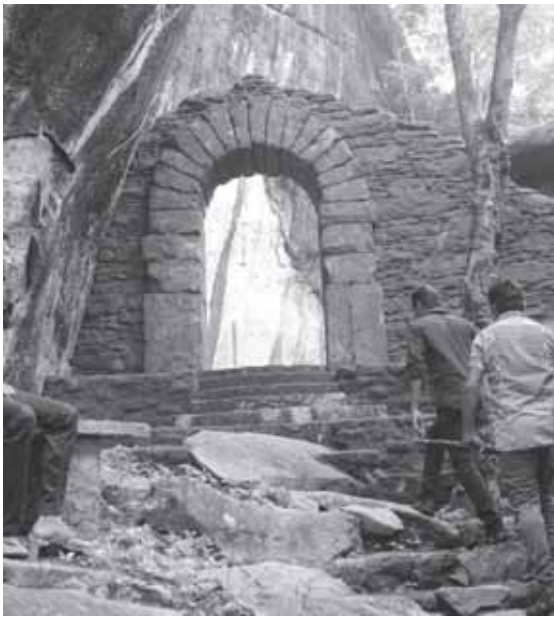

साल पहले महानदी उफान पर होती थी। उस समय यातायात के लिए जल मार्ग का उपयोग होता रहा होगा। कुछ पुरातत्वविदों का अनुमान था कि ये पत्थरनुमा चट्टान नहाने और कपड़ा धोने के पुराने घाट भी हो सकते हैं। ये बंदरगाह है या घाट, इसकी वास्तविकता जानने के लिए पुरातात्विक खुदाई जरूरी है। लेकिन पुरातत्व शोध हुए 5 साल बीत गए न खुदाई शुरु हुई और न ही पुरातत्व विभाग ने दोबारा इस क्षेत्र में कोई शोध किया।

गिद्धराज जटायु का मंदिर

छत्तीसगढ़ के दंडकारण्य में गिद्धराज जटायु का मंदिर है। यह वह स्थान है जब सीता का अपहरण कर रावण पुष्पक विमान से लंका जा रहा था, तो सबसे पहले जटायु ने ही रावण को रोका था। राम की राह में जटायु पहले शहीद थे। स्थानीय मान्यता के मुताबिक दंडकारण्य के आकाश में ही रावण और जटायु का युद्ध हुआ था और जटायु के कुछ अंग दंडकारण्य में आ गिरे थे। **क्रमशः**

महर्षिं वाल्मीकि के विचार आज भी प्रासंगिक : विनायकजी

8 अक्टूबर। मेरठ कैण्ट (उ.प्र.) स्थित अतिथि भवन में विहिप मेरठ महानगर की ओर से महर्षि वाल्मीकि जयंती का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में विहिप के सह– संगठन महामंत्री विनायकराव देशपाण्डे ने बताया कि समस्त हिंदू समाज वाल्मीकि का ऋणी है। हर हिंदू के दिलों की धड़कन भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की पहचान करने वाले महर्षि वाल्मीकि ही हैं। वर्तमान में भी उनके विचार प्रासंगिक है।

शरद पूर्णिमा उनका प्राकट्य दिवस है। आज ही के दिन भगवान कृष्ण ने गोपियों के साथ वृंदावन में महारास रचाया था। सारी रामायण सामाजिक समरसता का प्रबल आधार है। राम ने कोल, भील, रीछ, वानर, आदिवासी, वनवासी, गिरिवासी लोगों को जोड़कर उनकी सेवा कर एक विशाल सेना खडी की और रावण को पराजित किया और फिर समस्त पृथ्वी को राक्षस विहीन किया।

मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. राजकुमार, सर्वोदया हास्पिटल के डा. जे.वी. चिकारा, राजेश कुमार एसपी देहात और सीसीएस के प्रोफेसर शिवराज सिंह तथा कांट्रेक्टर प्रदीप पाबला ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए।

gopalkrishanatrey@gmail.com

संभाजीनगर (महाराष्ट्र), 5 अक्टूबर। कुलस्वामीनी मंगल कार्यालय के पीछे, विश्वकर्मा प्रखंड, एन.६, सिडको, संभाजीनगर। jrajeev1962@gmail.com

भिवानी (हरि0), 5अक्टूबर। बजरंग दल द्वारा घंटाघर स्थित बजरंग दल के कार्यालय में महर्षि वाल्मीकि जयंती का आयोजन किया गया। बजरंग दल के भिवानी प्रखंड संयोजक विनय परमार एडवोकेट ने महर्षि वाल्मीकि के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

बजरंग दल के संयोजक वरुण बजरंगी, विश्व हिंदू परिषद के जिला उपाध्यक्ष उमेद सिंह, सेवा प्रमुख मनोज शर्मा, जिला मिलन केंद्र प्रमुख सुनील सैनी, अभिषेक, जितेंद्र, विनोद बजरंगी, संदीप खरकिया उपस्थित रहे। भंडारे व हवन यज्ञ का आयोजन भी किया गया ।

bajrangdalbhiwani@gmail.com

हिन्दू संगम

भीलवाड़ा (राज0) 5 अक्टूबर विश्व हिंदू परिषद भीलवाड़ा द्वारा हिंदू संगम का आयोजन भीलवाड़ा नगर परिषद सभागार में किया गया जिसमें मुख्य अतिथि ओम प्रकाश सेन समाज सेवी और सेन समाज के प्रांतीय उपाध्यक्ष, अध्यक्षता पूज्य म0मं0 स्वामी हंस राम जी उदासीन हरि सेवा उदासीन आश्रम मंदिर, भीलवाड़ा, मुख्य वक्ता विनायकराव देशपांडे सह– संगठन मंत्री विश्व हिंदू परिषद, विशिष्ट अतिथि श्याम मल्होत्रा समाजसेवी, बाबूलाल खटीक समाज सेवी, नोरत मल कोलि महावीर व्यामशाला अखाड़ा प्रमुख अतिथि के रूप म मंचस्थ रहे।

हिंदू समाज के 42 जनप्रतिनिधि जिसमें जैन,राजपूत,ब्राह्मण कोली, खटीक वाल्मीकि समाज बलाई, रेगर सैन समाज, नामदेव समाज अधिकारी प्रमुख समाज के जनप्रतिनिधियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। सभी ने मंच से भारत के अंदर हिंदू हम सब एक हैं कहा।

प्रांत मंत्री सुरेश गोयल, प्रांत के मीडिया प्रभारी विनीत द्विवेदी, प्रान्त सह संयोजक गणेश प्रजापत, विभाग के भारत गैंगत मिठू लाल स्वर्णकार उपस्थित रहे। समापन पर सामूहिक पंगत कर प्रसाद ग्रहण किया गया।

vineetdwivedi1981@gmail.com

गोधरा (गुज0), 5 अक्टूबर। सामाजिक समरसता अभियान के अंतर्गत आज पूज्य वाल्मीकि जयंती के उपलक्ष्य में वाल्मीकि उद्यान गोधरा मे प्रान्त समरसता संयोजक राजुभाई भारद्वाज की उपस्थिति में पूज्य वाल्मीकि जी को माल्यार्पण कर किया गया।

– दीपेन वर्मा
मंत्री, विहिप, वडोदरा महानगर
varmadipen@gmail.com

वडोदरा (गुज0), 4 अक्टूबर। भारतमाता मंदिर महादेव तालाब, वाडी, वडोदरा महानगर मे समरसता सम्मेलन में 93 कार्यकर्ता उपस्थित रहे। रोहितभाई दरजी क्षेत्रीय संगठन मंत्री का प्रास्ताविक प्रवचन व मुख्य वक्ता विनायकराव देशपांडे सह संगठन महामंत्री का ओजस्वी मार्गदर्शन, श्री कमलेशदास जी साहब कबीर मंदिर पाणीगेट के महंत श्री ने आर्शीवचन, और अनिलभाई जैन वडोदरा महानगर अध्यक्ष ने आभार व्यक्त किया ।

दिपेन वर्मा, महानगर मंत्री, उमेश जोशी बजरंगदल संयोजक, मनोज अग्रवाल सह संयोजक सहित विविध समाज के महानुभाव उपस्थित रहे।

varmadipen@gmail.com

दिल्ली में वाल्मीकि जयन्ती कार्यक्रम को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री दिनेश चंद्र तथा गणमान्य महानुभाव

मुजफ्फरनगर (उ0प्र0), 8 अक्टूबर। भगवान वाल्मीकि जयंती के अवसर पर विचार गोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय सह–संगठन महामंत्री विनायक राव देशपांडे ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि पूरे हिंदू समाज के संत हैं। बड़े दुख की बात है कि हम उन भाइयों के साथ बैठने से कतराते हैं जो हिंदू धर्म के रक्षक है, धर्म योद्धा हैं जिन्होंने हिंदू धर्म की रक्षार्थ घृणित कार्य करना स्वीकार किया किंतु हिंदू धर्म नहीं छोड़ा। १२वींशती से पूर्व कहीं भी भंगी शब्द का उल्लेख नहीं मिलता, १८००वर्ष पूर्व कहीं भी चमडे के जूते पहनने का जिक्र नहीं है। विहिप चाहता है कि मंदिर, कुएं, श्मशान घाट समस्त हिंदूओं के लिए समान हों। प्रान्त सह संगठन मंत्री सुदर्शन चक्र व प्राप्त सह मन्त्री डॉ चंद्रमोहन शर्मा ने भी विचार रखे। अध्यक्षता समाजसेवी सुधीर खटीक ने की।

cms.sharma1963@gmail.com

पृष्ठ 12 का शेषांश....

लिए लाए जाने वाले पशुओं के साथ व्यवहार की बात है।

भाजपा प्रवक्ता जे ए लिंगदोह ने बयान जारी कर कहा कि पार्टी ने ''स्पष्ट कर दिया है कि पूर्वोत्तर राज्यों में इसे (गोमांस) लागू नहीं किया जाएगा. पशुधन राज्य का मामला है. इस पर राज्यों को निर्णय करना है।''

(न्यूज18, 20 अक्टूबर)

किसानों को कर्ज के चंगुल से निकालने के लिए डा. तोगड़िया ने दिए उपयोगी सुझाव

बिजनौर (उ.प्र.), 12 अक्टूबर। विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. प्रवीण तोगड़िया ने कहा कि देश का किसान मुगलों और अंग्रेजों के समय गरीब हुआ था, लेकिन देश आजाद होने के बाद वह कर्जदार हो गया। किसानों के कर्ज और गरीबी को फसलों की लागत का डेढ़ गुना मूल्य देकर ही खत्म किया जा सकता है। किसान खुद भी जैविक खेती कर और अपने खेतों में रासायनिक के बजाए देशी खाद प्रयोग की उपज बढ़ा सकते हैं। काकरान वाटिका में आयोजित समृद्ध किसान सम्मेलन में उन्होंने कहा कि 500 साल पहले कारखानों के कारण नहीं बल्कि समृद्ध खेती के कारण देश सोने की चिडिया था। फिर मुगलों और अंग्रेजों के समय में किसान गरीब हुआ, लेकिन देश को आजादी मिलने के बाद किसान कर्जदार हुआ है। आज देश के 13 करोड़ किसान परिवारों में सात करोड़ कर्जदार हैं।

उन्होंने किसानों को खुद को समृद्ध करने का संकल्प दिलाया। उन्होंने कहा कि वे भी किसान हैं और हर साल दो बार अपने गांव जाकर खेतों में काम करते हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता रामदर्शन अग्रवाल, संचालन विहिप के विभाग मंत्री जितेंद्र चौधरी ने की। इस दौरान विहिप के जिलाध्यक्ष ऋषिपाल सिंह, जिला संघ चालक डॉ. टीसी अग्रवाल, सीताराम राणा, राजीव अग्रवाल, प्रदीप चौहान, ईश्वरी प्रसाद, कपिल चौधरी, बलराज सिंह, कुंवर वीरेंद्र प्रताप सिंह, अनिल पांडे, मयंक मयूर, भाजपा जिलाध्यक्ष राजीव सिसौदिया, भगवंत ग्रुप के चेयरमैन अनिल सिंह भी उपस्थित रहे।

डॉ. प्रवीण तोगड़िया ने गांव आदमपुर में शिव मंदिर स्थित विश्व हिंदू परिषद कार्यालय का उद्घाटन किया। उन्होंने कार्यकर्ताओं से अपने संक्षिप्त भाषण में कहा कि हिंदू समाज पहले भी सशक्त था और आज भी सशक्त है। हिंदू ने तलवार चलानी भी सीखी है और मान–सम्मान पर बात आने पर बदला भी लिया है। हिंदू सदियों से जीतता आया है और उसने कभी हार नहीं मानी है। हमारी यह संस्कृति कभी खत्म नहीं होगी। उन्होंने कहा कि हमें मंदिर भी चाहिए और समृद्धि भी। विश्व हिंदू परिषद हिंदुओं की एकता के लिए काम कर रही है।

(अमर उजाला)

खोया-पाया शिविर

30–09–2017 को मोरहाबादी मैदान, रांची, झारखण्ड में रावण दहन कार्यक्रम के अवसर पर हिन्दू हेल्प लाईन का खोया पाया शिविर लगाया गया जिसका उद्घाटन पंजाबी हिन्दू बिरादरी के अध्यक्ष राजेश खन्ना और हिन्दू हेल्प लाईन के प्रांत संयोजक नागेन्द्र पांडेय ने संयुक्त रूप से किया। यह शिविर H2O (हर हेल्थ ऑर्गनिजेसन) (हिन्दू हेल्प लाईन की महिला शाखा) प्रमुख सदस्य श्रीमती पूनम आनंद के मार्गदर्शन में सम्पन हो रहा है। झारखण्ड प्रांत सह संयोजक अनुनय मंत्री, पूनम आनंद, तिलक राज आनंद, प्रशंजित सरकार, संजीव तिवारी, मनोज कुमार, गौतम एवं अन्य कार्यकताओं ने योगदान दिया।

hindurastra.keshavaraju@gmail.com

स्वास्थ्य शिविर संभाजीनगर (महाराष्ट्र), 6 अक्टूबर।

jrajeev1962@gmail.com

शुभकामना आदान-प्रदान कार्यक्रम

बिराटनगर, २८ सितम्बर। विश्व हिन्दू परिषद नेपाल द्वारा विजयादशमी, शुभ दीपाबली एवं छठ पर्व के उपलक्ष्य में शुभकामना आदान–प्रदान कार्यक्रम सम्पन्न किया गया।

परिषद द्वारा असोज ११ गते बुधबार (२७ सितम्बर) बिराटनगर, स्थित राधाकृष्ण मन्दिर प्रांगण में आयोजित वह कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विहिप– नेपाल प्रभारी स्नेहपाल सिंह, विशिष्ट अतिथिगण जगत गुरु बाल सन्त मोहन शरण दास बैष्णव एवं स्वामी अच्यूत जी, समाजसेवी भिखमचन्द सरल लगायत समेत स्थानीय कार्यकर्ताओं की मौजूदगी रही ।

विहिप की अंचल एवं जिला समिति का गठन किया गया। राजबिराज स्थित जेसिस भवन में भी कार्यक्रम आयोजन किया गया। जनकल्याण प्रतिष्ठान नेपाल के सगरमाथा अंचल संयोजक बिन्दुलाल साह की अध्यक्षता एवं विहिप नेपाल प्रभारी स्नेहपाल सिंह के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न कार्यक्रम में हिन्दू धर्मवालम्बियों द्वारा मनाए जानेवाले सभी पर्व एवं नेपाल को पुनः हिन्दू राष्ट्र स्थापनार्थ हेतु विचार विमर्श किया गया। विशिष्ट अतिथि प्रमुख जिल्ला अधिकारी, हिन्दू स्वयंसेवक संघ नेपाल के केन्द्रीय सदस्य भोगेन्द्र झा लगायत स्थानीय समाजसेवी, बुद्धिजिवी, युवा, विद्यार्थी पत्रकार भी उपस्थित रहे। संचालन हिन्दु युवा परिषद जिलाध्यक्ष जंग बहादुर सिंह ने किया।

raja.news360@gmail.com

राणा पून्जा का स्मरण

राजसमंद (राज0), 5 अक्टूबर। विश्व हिन्दू परिषद बजरंग दल द्वारा भीलू राणा पून्जा की जयन्ती पर संगोष्ठी का आयोजन कर मेवाड़ की स्वतंत्रता हेतु उनके अविस्मरणीय योगदान को याद करते हुए उनको पुष्पांजलि अर्पित की गई। विभाग संयोजक गजेन्द्र पालीवाल ने बताया कि महाराणा प्रताप द्वारा स्वाधीनता हेतु जो संघर्ष किया गया वह भारत के इतिहास मे अद्भुत घटना मानी जाती है। यह संघर्ष जिन स्वामिभक्त योद्धाओं द्वारा संभव हो पाया उनमे भीलू राणा पूँजा का सर्वोच्च स्थान है।

जिला सह संयोजक मनीष छापरवाल नगर संयोजक भरत वैष्णव सह संयोजक हरीश कुमावत खण्ड संयोजक भवानी जोशी सहसयोजक विजय गमेती सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

gajju4494@gmail.com

ग्वालियर (म0प्र0) मे दशहरा

शस्त्र पूजन

जयपुर 1 अक्टूबर 2017। विश्व हिन्दू परिषद का आयाम बजरंग दल की ओर से रामसहाय जी का खेत, बरकत नगर, आदर्श नगर में शस्त्र पूजन का कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम में कार्यकर्ताओं को पूज्य साध्वी समदर्शी जी का आशीर्वचन प्राप्त हुआ।

vhpravindra21@gmail.com

सार्थक प्रयास

गंजबासौदा (म0प्र0), 6 अक्टूबर। अपने बुजुर्गों की स्मृति दिवस को सार्थक बनाने का अनूठा प्रयास करते हुए, दुर्गावाहिनी की जिला संयोजिका नीलू चौबे ने अपनी सास स्व. पानबाई की पुण्यतिथि पर ग्राम बनवा जागीर में निर्धन महिलाओं को साड़ियां व मिष्ठान वितरित किए। साथ ही ग्राम में मातृशक्ति, दुर्गावाहिनी द्वारा संचालित होने वाले सत्संग केन्द्र का शुभारंभ पूजन के साथ किया। क्षेत्र मंत्री राजेश तिवारी, समरसता प्रमुख सुनील यादव, विभाग संयोजिका नीलेश अग्रवाल, वीरेन्द्र जैन, रूचीला, ज्योति वर्मा, नितिन सक्सेना सहित ग्रामीण उपस्थित रहे।

raktsewasamitimp@gmail.com

सर्जीकल स्ट्राइक

"दवा बिना रोगों का एनकांउटर कीजिए और तंदुरुस्त रहें"

विशिष्ठता

- विश्व में पहली बार। पूर्णत: वैज्ञानिक
- रोगों की भ्रामकता दूर होगी और उपाय आपके पास होगा
- आप जरुरत से ज्यादा प्रोटीन ले रहे हो, जिसके कारण आपके यूरिन में एसिडिटी है
- सप्ताह में एक बार पूरे परिवार का यूरिन टेस्ट अवश्य करें और खुराक के माध्यम से जोड़ों के दर्द के अलावा अनेक (शायद सभी) रोगों से मुक्त हों।
- केंसर में भी फायदा हो सकता है। मामूली कीमत में पूरा परिवार निरोगी रहेगा

किट

पुस्तक में रोगों का इलाज और बहुत कुछ+ 120 यूरिन स्ट्राइप्स

₹300 में एक किट, लेकिन ₹ 1200/- में 6 किट मिलेगी

आपका कार्य पैसा भेजें

मनीआर्डर/राष्ट्रीयकृत बैंक चैक/NEFT से

हर्षद पंडित देना बैंक ज्वाइंट एकाउंट सं/019610002161 IFC BKD 310196

एसएमएस करें

मोबाइल 9428299637 पर जिस में राशि/तिथि, आपका पता

किट की भाषा (हिन्दी,गुजराती, अंग्रेजी) की जानकारी अवश्य लिखें।

नैशनल हैल्थ वर्कर

डॉ. हर्षद पंडित, M.V.SC. (Medicine)

'ओम' 4, करम पुरा, राजकोट-360001 (गुजरात)

लक्ष्य रोग मुक्त भारतीय।

राष्ट्रीय समर्पण

- राष्ट्रीय कार्यक्रम में 105 लाख +
- शहीद फंड में 30 लाख+
- 11,000/- हर माह पेंशन में से

ललकार जिन्हें भारत पर गर्व है, वह सहकार देकर आरोग्य शिविर का आयोजन करें।

Email: drharshadpandit@gmail.com | Website: www.rejuvenatewithoutmedicine.com

संस्कृति के साथ विकास होता है : जीवेश्वर मिश्र

बीहट (बेगूसराय), 6 अक्टूबर। ''गंगा की अविरलता ही गंगा की निर्मलता की प्रथम चरण है। मां गंगा अविरल रूप से बहती रहें।''

उक्त बातें शुक्रवार को सर्वमंगला अध्यात्म योग विद्यापीठ में आयोजित कार्तिक कल्पवास मेला एवं महाकुंभ के सफल आयोजन के लिए ज्ञानमंच के पीछे राष्ट्रीय ध्वज, इंद्र ध्वज, हनुमंत ध्वज एवं कुंभ ध्वज का ध्वजारोहण करने के उपरांत बरौनी थर्मल के जीएम अरुण कुमार सिन्हा ने कहीं। गंगा का दर्शन एवं स्पर्श मात्र से ही पाप समाप्त हो जाता है। महाकुंभ एवं कल्पवास मेला पूरी तरह से सफल होगा। विहिप के

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जीवेश्वर मिश्र ने कहा, सिमरिया में आयोजित होने वाले महाकुंभ में केंद्र एवं राज्य सरकार को सभी प्रकार की व्यवस्था करनी चाहिए। राज्य सरकार के द्वारा पहले की अपेक्षा कुछ बेहतर कार्य हो रहा है। केंद्र सरकार के नमामि गंगे के तहत गंगा की सफाई एवं अविरल प्रवाह गंगा नदी में प्रवाहित नहीं हो रही है। संस्कृति का विनाश करके विकास को मंजूर नहीं कर सकते हैं। संस्कृति के साथ विकास होता है।

समारोह को विहिप के उत्तर बिहार के अध्यक्ष कृष्णदेव झा, तुलार्क कुंभ केंद्रीय समिति के अध्यक्ष डॉ. बुद्धिनाथ मिश्रा, उप सचिव प्रो. प्रवीण कुमार प्रेम, दक्षिण भारत हिन्दी महासभा के डॉ. ईश्वर करुण आदि ने संबोधित किया। मंच संचालन डॉ. घनश्याम झा ने किया। आगत अतिथियों का स्वागत शॉल एवं माला पहनाकर रोवद्र ब्रह्मचारी जी ने किया।

सुभाषित

नानुप्तं रोहते सस्यं तद्वद् दानफलं विदुः।
यद्यद् ददाति पुरुषः तत् तत् प्राप्नोति केवलम्।।

यह सभी जानते हैं कि जब तक खेत में अन्न का बीज नहीं बोया जायेगा, तब तक उसमें न घास पैदा होगा न अन्न। इसी प्रकार जब तक कोई अपने हाथों से दान नहीं करेगा तब तक उसे अच्छा फल मिलने वाला नहीं। अतः मनुष्य जिस प्रकार से और जिस भावना से दान करता है उसे उसी प्रकार उसका फल मिलता है।

ओंगोले (आन्ध्र) में 8 अक्टूबर को संस्कृति दीक्षा यज्ञ

15 अक्टूबर को नागरकुर्नूल जिले में विहिप मण्डल समिति सदस्यों का एक दिवसीय शिविर आयोजित किया गया जिसमें 70 स्थानों से 120 कार्यकर्ता सहभागी हुए।

दीवाली को दीवाली ही रहने दें !!

प्रवीन गुगनानी

दो तथ्य भारतीय न्याय व्यवस्था के समक्ष विनम्रतापूर्वक रखना चाहता हूँ 1. हिंदुत्व हजारों वर्षों से एक विकसित जीवन शैली रही है। 2. यह सांस्कृतिक जीवन शैली अपना उन्नति मार्ग स्वयं ही खोजती रही है। इसे संक्षिप्त विस्तार दूं तो यह व्यक्तव्य होगा कि हिंदू जीवन शैली व इसके पर्व, उत्सव, त्यौहार, परम्पराएं प्रति 25–50 वर्षों में नया रूप लेते रहे हैं और लेते रहेंगे। हमने इन परिवर्तनों से स्वयं को देशज रहते हुए अन्तरराष्ट्रीय बनने की सतत यात्रा बना लिया है। यदि संस्कृति में समय के साथ दोष आते हैं तो हम स्वयं ही उसकी पहचान कर लेते हैं और उसके निवारण का भी हमारा स्वर्णिम इतिहास रहा है।

दीवाली के पटाखों पर अपने निर्णय पर उपरोक्त दो तथ्य व उनकी संक्षिप्त विवेचना के मर्म को न्याय मंदिर यदि समझ लेगा तो संभवतः उसे हिंदुत्व के विषय में अनावश्यक हस्तक्षेपों से बचने की राह मिल जायेगी। भारतीय न्यायालय एवं न्याय व्यवस्था निस्संदेह अपने सभी स्वरूपों में आदरणीय, अनुकरणीय व अनन्य रही है। इसकी अपनी अद्भुत देशज और अन्तराष्ट्रीय छवि है किंतु लगता है इन दिनों भारतीय न्याय व्यवस्था को "देशज" त्याग कर "अन्तरराष्ट्रीय" हो जाने का अतीव मोह हो गया है।

वर्तमान में दीवाली के पटाखों सहित कई बार अन्य धार्मिक मान्यताओं के विषय में अनावश्यक हस्तक्षेप के संदर्भ में निश्चित तौर पर यह कहना होगा कि न्यायालय ने हिंदुत्व को एक जीवन शैली तो मान लिया है किंतु इस हिंदू जीवन शैली के मूल नैसर्गिक स्वरूप को नहीं समझा जो स्वयमेव विकास पथ पर चलता है, धर्म को विज्ञान का आधार देता है, विज्ञान में धर्म का पुट प्रवाहित करता है, पर्यावरण को देवता मानता है, प्रकृति की आराधना करता है, ग्राम, राज्य, देश, पृथ्वी से ऊपर ब्रह्माण्ड के कल्याण की कामना करता है व इन सब सत्कर्मों का कर्ता, नियंता, नियामक होते हुए भी मानव को इन सबका एक माध्यम मात्र मानता है। न्याय मंदिर ने हिंदुत्व के विकास क्रम में आई अवनतियों व उन्नतियों का अध्ययन किया होता तो हिंदुत्व को इस प्रकार के निर्देश देने के स्थान पर परामर्श या संकेत करके स्वयं को अधिक सहज व देश को अधिक सुरभित पाता।

पटाखों पर प्रतिबंध की बात करने वाले इन कथित जनहित याचिकाकर्ताओं और उन्हें त्वरित प्राथमिकता से बिना सोचे सुन लेने वाले न्याय मंदिर से आग्रह है कि वह हिंदुत्व के विकास क्रम के मात्र पिछले दो तीन सौ वर्षों के इतिहास का ही सतही अध्ययन कर लेंगे तो भी उन्हें समझ आ जाएगा कि हिंदुत्व अपनी बुराइयों से निपटने में नैसर्गिक रूप से सक्षम है, उसे न्यायालय के निर्देशों की आवश्यकता नहीं है। न्यायालय तनिक हिंदुत्व विकास के इस सहज, समृद्ध, सबल व संवेदनशील विकास क्रम में आये इन व्यक्तियों व संस्थाओं के नामों को पढ़ भर लें।

ब्रह्म समाज, रामष्ण मिशन, यंग बंगाल आन्दोलन, थियोसाफिकल सोसायटी, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, तत्वबोधिनी सभा, वेदान्त दर्शन, दयानंद एंग्लो वैदिक स्कूल, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, सेंट्रल हिन्दू कालेज, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, कूका व नामधारी आन्दोलन, निरंकारी आन्दोलन, धर्लू नायडू वेद समाज, विधवा आश्रम, सर्वेन्ट्स आफ इंडिया सोसायटी, स्वामी विवेकानंद, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, संत रविदास, नारायण गुरु, ज्योतिबा फुले, राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती, आत्माराम पांडुरंग, गोविन्द महादेव रानाडे, बाबा साहेब अम्बेडकर आदि–आदि ये सब हिंदुत्व के सुधारक थे और किसी न्यायालय के आदेश या हस्तक्षेप की उपज नहीं थे। ये मात्र हिंदुत्व जीवन शैली के समृद्ध व सतत चलते विकास क्रम में आये एक पड़ाव मात्र थे।

क्षमापूर्वक उल्लेखनीय है कि हिंदुत्व विकास में योगदान करने वाले शताधिक व्यक्तियों व संस्थाओं का

हिंदुत्व के विषय में हस्तक्षेप करने से देश में तीक्ष्ण प्रतिक्रिया नहीं होती। यह तथ्य न्यायालय को 'पटाखों पर प्रतिबंध' जैसे अन्य आदेशों हेतु प्रेरित करता है और 'तीक्ष्ण प्रतिक्रिया का भय' या 'छद्म धर्म निरपेक्षता का भूत' उसे मुस्लिम महिलाओं की नारकीय स्थिति देखने नहीं देता!

उल्लेख समय व स्थानाभाव के कारण यहां संभव नहीं है।

देश भर में हिंदुत्व जीवन शैली की प्रथाओं, परम्पराओं के विरुद्ध जिस प्रकार तथाकथित बुद्धिजीवी, अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार विजेता, वामपंथी, आधुनिकतावादी लोग न्यायालय में याचिकाएं लगा रहें हैं व हिंदुत्व को विरूप–विद्रूप करने का प्रयास कर रहें हैं उनकी मानसिकता, उनके दुराशय व उनकी पृष्ठभूमि को भी न्यायालय ने नहीं जांचा। इस देश में कुछ लोग हैं जो केवल इसी काम में लगे हुए हैं. न्यायालय द्वारा देशहित में दी गई सुविधा "जनहित याचिका" का किस प्रकार गलत लाभ इन कथित याचिकाकर्ताओं द्वारा उठाया है। इस चलन (ट्रेंड) का अध्ययन भी न्यायालय को करना चाहिए। दीवाली पर पटाखों पर प्रतिबंध की बात करने वाले लोग क्रिसमस की आधी रात को जलने वाले पटाखों पर प्रतिबंध हेतु क्यों नहीं आते?

ईद पर अनगिनत बकरों के रक्त से इनकी मानवीयता और संवेदनशीलता प्रभावित क्यों नहीं होती ??तीन तलाक, हलाला, मुस्लिम बहुविवाह, मस्जिदों से समय–असमय उठती कानफोडू आवाजें, मुस्लिम समाज की दस–पांच बच्चों को जन्म देती आम प्रवृत्ति, लव जिहाद के योजनाबद्ध कुचक्र, पटाखों, सेवा–शिक्षा–स्वास्थ्य के नाम पर भोले भाले जनजातीय लोगों के ठगीपूर्वक हो रहे अंधाधुंध धर्मांतरण पर ये याचिकाकर्ता क्यों प्रश्न नहीं उठाते ??? स्वयं भारतीय न्यायालय से भी यह प्रश्न है कि समय– समय पर हिंदुत्व से जुड़ी समस्याओं पर स्वयं संज्ञान लेने वाला न्यायालय अन्य धर्मों से जुड़ी ज्वलंत समस्याओं पर अब तक स्वयं संज्ञान लेने से क्यों बचता रहा? भारतीय न्याय व्यवस्था को अब तक भारतीय मुस्लिम स्त्रियों की दोयम दर्जे की स्थिति का ख्याल क्यों नहीं आया?

उत्तर स्पष्ट है कि न्यायालय सुविधा चाहता है और असुविधाजनक प्रश्नों से बचना चाहता है। हिंदुत्व के विषय में हस्तक्षेप करने से देश में तीक्ष्ण प्रतिक्रिया नहीं होती। यह तथ्य न्यायालय को "पटाखों पर प्रतिबंध" जैसे अन्य आदेशों हेतु प्रेरित करता है और "तीक्ष्ण प्रतिक्रिया का भय" या "छदम धर्म निरपेक्षता का भूत" उसे मुस्लिम महिलाओं की नारकीय स्थिति देखने नहीं देता।

बहरहाल भारतीय न्यायालय से इतना ही निवेदन है कि वह ऐसे चिह्नित याचिकाकर्ताओं से बचे। भारतीय शासन व न्याय व्यवस्था हिंदुत्व को उसके नैसर्गिक, प्राकृतिक व सहज रूप में विकसित होनें दे। हिंदुत्व अपने दोषों को चिह्नित करना, उनका निवारण करना, गलत परम्पराओं का उन्मूलन, नई परम्पराओं को विकसित करना, जीवन का वैज्ञानिकी करण करना आदि– आदि सब कुछ जानता है। न्यायालय अधिकतम से अधिकतम संकेत या परामर्श किया करे तो उचित रहेगा और यदि उसे आदेश देना है तो वह समुचित, सर्वांगीण व सम्पूर्ण परिवेश की चिंता करे. हिंदुत्व को पकड़ना व अन्यों को अनदेखा करना भारत में असंतोष का एक कारण बन सकता है। समय रहते इससे बचने का अभ्यास करना चाहिए।

guni.pra@gmail.com

मुहर्रम के १५ दिन के बाद भी नदीपात्र में विसर्जित ताबूत यथास्थिति में

पुणे। मुहर्रम के अवसर पर निकलने वाले जुलूस में मुसलमानों द्वारा ताबूत नचाए जाते हैं तथा बाद में वह विसर्जित किए जाते हैं। यहां के संगम पुल के पास नदीपात्र में मुहर्रम होकर १५ दिन बीतने के बाद भी उन ताबूतों के अवशेष पानी में तैर रहे हैं।

इस समाचार से यह ध्यान में आता है कि, हिन्दुओं के गणेशमूर्तीयों के विसर्जन पर जलप्रदूषण का कारण देकर नदी में विसर्जन करने से रोकने वाले तथाकथित बुद्धीवादी एवं पर्यावरणवादी अब मुसलमानों के ताबूतों के विसर्जन पर चुप हैं। ताबूतों के अवशेष पानी में वैसे ही रह जाने से होने वाला प्रदूषण अब इन्हें क्यों नहीं दिखता? क्या प्रदूषण के नियम सिर्फ हिन्दुओं के त्यौहारों के लिए ही है? इससे पालिका–प्रशासन एवं पर्यावरणवादीयों का दोगलापन सामने आता है।

www.hindujagruti.org

पटाखों पर बैन : त्रिपुरा के राज्यपाल ने पूछा

लाउडस्पीकर पर होने वाली अजान पर चुप क्यों हैं सेक्युलर?

पटाखों पर लगे प्रतिबंध को लेकर त्रिपुरा के राज्यपाल तथागत रॉय की प्रतिक्रिया आई है। मंगलवार को उन्होंने माइक्रो ब्लॉगिंग साइट ट्विटर पर लिखा कि हर बार दिवाली पर पटाखों से फैलने वाले ध्वनि प्रदूषण को लेकर जंग छिड़ जाती है। साल के सिर्फ कुछ दिनों तक। लेकिन सुबह साढ़े चार बजे लाउडस्पीकर पर होने वाली अजान को लेकर कोई बहस नहीं होती।

अगले ट्वीट में उन्होंने यह भी कहा कि अजान से फैलने वाले ध्वनि प्रदूषण पर सेक्युलर लोगों का चुप रहना उन्हें हैरान करता है। उन्होंने आगे बताया कि कुरान या हदीस नहीं कहते कि लाउडस्पीकर के जरिए अजान पढ़ी या पढ़ाई जाए। मुअज्जिन मीनारों से अजान को चिल्ला कर पढ़ते हैं, जिसके लिए मीनारें बनी हैं। लाउडस्पीकरों का इस्तेमाल इस तरह से इस्लाम का विरोध करता है।

जनसत्ता, 18 अक्टूबर

बांग्लादेशी शरणार्थी और आदिवासियों में तनाव

छत्तीसगढ़ के बस्तर में बसाए गए बांग्लादेशी शरणार्थियों और स्थानीय आदिवासियों के बीच संघर्ष बढ़ता जा रहा है। आदिवासियों का आरोप है कि 1960–70 के दशक में बसाए गए शरणार्थी आज कई इलाकों में बहुसंख्यक हो गए हैं और वे आदिवासियों के अधिकारों पर कब्जा कर रहे हैं।

जबकि बंग समाज का मानना है कि शरणार्थियों के नाम पर कुछ आदिवासी नेता राजनीति कर रहे हैं। पिछले साल नवंबर में ही छत्तीसगढ़ सरकार ने बंगाली समाज की छह जातियों को पिछड़ा वर्ग में शामिल करने का आदेश दिया है। लेकिन बस्तर के अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति और पिछड़ा वर्ग के लोग इसके खिलाफ हैं और इस मुद्दे पर सड़कों पर भी आंदोलन हो चुका है।

बस्तर के सात जिलों में सर्व आदिवासी समाज ने जब बंद का आयोजन किया तो आदिवासी लड़कियों के साथ सुरक्षाबलों द्वारा कथित यौन प्रताड़ना और औद्योगिक विकास तो मुद्दा था ही, 1960–61 और फिर 1971–72 में बांग्लादेश से आए शरणार्थियों के खिलाफ लड़ाई भी बंद का बड़ा मुद्दा था।

विरोध की वजह

बंद का मिलाजुला असर नजर आया। अलग–अलग क्षेत्र से आने वाली खबरों के अनुसार कई इलाकों में दुकानें पूरी तरह बंद रहीं तो कहीं–कहीं यातायात भी प्रभावित हुआ। सर्व आदिवासी समाज के नेता राजाराम तोड़ेम का आरोप था कि बस्तर में जितने लोगों को 60 और 70 के दशक में बसाया गया था, उनकी बजाय लाखों दूसरे लोगों ने बस्तर में घुसपैठ कर अपनी जगह बना ली।

आदिवासी नेताओं का तर्क है कि 60 और 70 के दशक में बसाए गए लोगों की संख्या महज 503 थी। दशकीय वृद्धि के हिसाब से यह आंकड़ा चार दशकों में लगभग 50 हजार होनी थी लेकिन केवल पखांजूर तहसील में ही इनकी जनसंख्या डेढ़ लाख के आसपास है।

राजाराम तोड़ेम कहते हैं, "विदेशी लोगों ने जमीनें खरीद ली, आदिवासियों के संसाधनों पर कब्जा कर लिया। अब आदिवासी कहां जाएं।

तोड़ेम की नाराजगी को पिछले महीने स्थानीय आदिवासी और बांग्लादेशी शरणार्थियों के बीच की लड़ाई से भी जोड़कर देखा जा सकता है, जब विश्व आदिवासी दिवस पर दोनों समुदायों के बीच जमकर मारपीट हुई और फिर मुकदमा भी दर्ज हुआ।

राजनीति

लेकिन बंग समाज के प्रदेश अध्यक्ष असीम राय पूरे प्रकरण से दुखी हैं। राय का कहना है कि कुछ आदिवासी नेता बंग समाज और आदिवासियों के बीच फूट डालकर अपनी राजनीति कर रहे हैं। भाजपा से जुड़े राय ने बीबीसी से बातचीत में कहा, "आदिवासी समाज और बंगाली समाज के लोग बरसों से मिल जुलकर रहते आये हैं। लेकिन कुछ ऐसे नेता, जिनका कोई राजनीतिक आधार नहीं बचा है, वे दोनों समुदायों को लड़ाने की कोशिश कर रहे हैं।"

जाहिर है, कुछ विधानसभा क्षेत्रों में निर्णायक वोट बैंक साबित होने वाले बंगाली समाज की नाराजगी कोई भी उठाने के लिये तैयार नहीं है और आदिवासियों को तो नाराज करने का कोई सवाल ही नहीं उठता।

(वेब दुनिया, 28 सितम्बर)

असम में ४२ हजार बांग्लादेशी गायब : डीजीपी

गुवाहाटी– असम । एक ओर जहां केंद्र व राज्य सरकार असम में बांग्लादेशी घुसपैठियों को लेकर परेशान है वहीं आज असम पुलिस के डीजीपी मुकेश सहाय ने एक बड़ा खुलासा करते हुए कहा कि असम में 42 हजार संदिग्ध बांग्लादेशी लापता हैं ।

असम पुलिस मुख्यालय में आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए डीजीपी सहाय ने कहा कि राज्य में 42 हजार संदिग्ध बांग्लादेशी लापता हैं जिनकी तलाशी के लिए पुलिस अभियान चला रही है । उन्होंने कहा कि अभी तक ढाई हजार संदिग्ध बांग्लादेशियों की शिनाख्त हो चुकी है । इसके लिए असम पुलिस ने एक टास्क फोर्स भी गठित किया है । पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा और मेघालय में बांग्लादेश से लगी सीमाओं पर संपूर्ण तारबंदी नहीं होने के चलते बांग्लादेशी घुसपैठिए आसानी से प्रवेश कर असम में घुस आते हैं ।

घुसपैठिए अक्सर त्रिपुरा के रास्ते असम में प्रवेश करते है। सुरक्षा बल उन स्थानों पर सक्रिय नहीं रहते, जिसके चलते वे आसानी से प्रवेश कर जाते है।

एक और विस्फोटक खुलासा करते हुए डीजीपी सहाय ने कहा कि रोहिंग्या मुसलमान भी असम में प्रवेश की कोशिश कर रहे हैं। हाल ही में बराक घाटी के

करीमगंज के पाथरकांदी से असम पुलिस के हत्थे चढ़े छह रोहिंग्याओं का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि ये भी सोनामारा और त्रिपुरा के रास्ते ही असम में प्रवेश करने की कोशिश कर रहे थे। उनका मकसद गुवाहाटी पहुंचना था।

शेष पृष्ठ 25 पर....

गतांक से आगे....

भक्त शिरोमणि संत नामदेव

संत सूंलेना संत सूंदेना,
संत संगति मिली दुस्तर तिरना
संत की छाया संत की माया,
संत संगति मिलिगोविंद पाया।

उनकी सेविका जनाबाई ने भी श्रेष्ठ अभंगों की रचना की। संत नामदेव अपनी उच्चकोटि की आध्यात्मिक उपलब्धियों के लिए विख्यात हुए। चमत्कारों के सर्वथा विरुद्ध थे। वह मानते थे कि आत्मा और परमात्मा में कोई अंतर नहीं है तथा परमात्मा की बनाई हुई इस भू (भूमि तथा संसार) की सेवा करना ही सच्ची पूजा है। इसी से साधक भक्त को दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है। सभी जीवों का कर्ता–धर्ता एवं रक्षक, पालनकर्त्ता विठ्ठलराम ही है, जो इन सब में मूर्त भी है और ब्रह्मांड में व्याप्त अमूर्त्त भी है। इसलिए नामदेव कहते हैं –

जत्रजाऊं तत्र बीठलमेला।
बीठलियौराजा रांमदेवा।

सृष्टि में व्याप्त इस ब्रह्म–अनुभूति के और इस सृष्टि के रूप आकार वाले जीवों के अतिरिक्त उस विठ्ठल का कोई रूप, रंग, रेखा तथा पहचान नहीं है। वह ऐसा परम तत्व है कि उसे आत्मा के नेत्रों से ही देखा और अनुभव किया जा सकता है। गोविंद का नाम स्मरण करना ही नामदेव की सबसे बड़ी सीख है।

महाराष्ट्रीय संत परंपरा के अनुसार उनकी निर्गुण भक्ति थी, जिसमें सगुण निर्गुण का कोई भेदभाव नहीं था। उन्होंने मराठी में कई सौ अभंग और हिंदी में सौ के लगभग पद रचे हैं। उनके पदों में हठयोग की कुंडलिनी–योग –साधना और प्रेमाभक्ति की (अपने 'राम' से मिलने की) विह्वलभावना दोनों हैं। निर्गुणीय कबीर के समान नामदेव में भी भगवन्नाम एवं सद्गुरु के प्रति आदर भाव विद्यमान है। कबीर के पदों में यत्र–तत्र नामदेव की भावछाया दृष्टिगोचर होती है। कबीर के पूर्व नामदेव ने उत्तर भारत में निर्गुण भक्ति का प्रचार किया, जो निर्विवाद है। भक्त नामदेवजी का महाराष्ट्र में वही स्थान है, जो भक्त कबीर जी अथवा सूरदासजी का उत्तरी भारत में है।

भावावस्था

एक समय वे भोजन कर रहे थे। एक श्वान आकर रोटी उठाकर ले भागा। नामदेव जी उसके पीछे घी का कटोरा लिए भागे और कहने लगे ''भगवान, रुखी मत खाओ, साथ में घी लो''।

शिष्य तथा संप्रदाय

उनके समय में नाथ और महानुभाव संप्रदाय का महाराष्ट्र में प्रचार था। इनके अतिरिक्त महाराष्ट्र में पंढ़र पुर के 'विठोबा' की उपासना भी प्रचलित थी। इसी उपासना को दृढ़ता से चलाने के लिए संत ज्ञानेश्वर ने सभी संतो को एकत्रित कर 'वारकरी संप्रदाय' की नींव डाली। सामान्य जनता प्रति वर्ष आषाढ़ी और कार्तिकी एकादशी को विठ्ठल दर्शन के लिए पंढ़र पुर की 'वारी' (यात्रा) किया करती है। यह प्रथा आज भी प्रचलित है। इस प्रकार की वारी (यात्रा) करने वालों को 'वारकरी' कहते हैं। विठ्ठलोपासना का यह 'संप्रदाय' 'वारकरी' संप्रदाय कहलाता है। नामदेव इसी संप्रदाय के एक प्रमुख संत माने जाते हैं। आज भी इनके रचित अभंग पूरे महाराष्ट्र में भक्ति और प्रीति के साथ गाए जाते हैं। महाराष्ट्र में उनके प्रसिद्ध शिष्य हैं, संत जनाबाई, संत विष्णुस्वामी, संत परिसा भागवत, संत चोखामेला, त्रिलोचन आदि। उन्होंने इनको नाम–ज्ञान की दीक्षा दी थी। इस धरती पर जीवों के रूपमें विचरने वाले विठ्ठल की सेवा ही सच्ची परमात्म सेवा है।

समाधि

पंढ़रपुर के विठ्ठल मंदिर के महाद्वार पर उन्होंने समाधि ले ली। ८० वर्ष की आयु तक इस संसार में विठ्ठल के नाम का जप करते–कराते पंढ़रपुर में विठ्ठल के चरणों में आषाढ कृष्ण त्रयोदशी संवत १२७२ में नामा स्वयं भी इस भवसागर से पार चले गए। **(समाप्य)**

संदर्भ : संत नामदेव लेखक : डॉ. हेमंत विष्णु इनामदार तथा प्रकाशक : श्री. जयंत तिलक, केसरी मुद्रणालय, ५६८ नारायण पेठ, पुणे ३० और संकेतस्थल

कबीर के पूर्व नामदेव ने उत्तर भारत में निर्गुण भक्ति का प्रचार किया, जो निर्विवाद है। भक्त नामदेवजी का महाराष्ट्र में वही स्थान है, जो भक्त कबीर जी अथवा सूरदासजी का उत्तरी भारत में है।

अवैध बूचड़खाना देखने गए न्यायालय आयुक्तों के दल पर गोतस्करों द्वारा आक्रमण

बेंगलुरु : बेंगलुरु के येलाहांका क्षेत्र में मंगलवार को अवैध बूचड़खानों की जांच के लिए गए कोर्ट कमिश्नरों, वकीलों, पुलिस और गोरक्षक एनजीओ की टीम पर भीड़ ने आक्रमण बोल दिया। गो ज्ञान फाउंडेशन की सदस्य कविता जैन के अनुसार, जांच दल के सदस्यों के साथ धक्कामुक्की हुई, उनका पीछा किया गया और आक्रमण भी किया गया। भीड़ ने पुलिस की गाड़ियों के शीशे तक तोड़ डाले। पुलिस ने इस सिलसिले में 13 लोगों को गिरफ्तार किया है।

'नवभारत टाइम्स' के समाचार के अनुसार, टीम पर आक्रमण उस वक्त हुआ, जब उसे डोडा बेट्टाहल्ली में एक अवैध बूचड़खाना दिखा। इसे एसएस गराज के भीतर चलाया जा रहा था। इसमें १५ गायें और गोवंश के अन्य पशु थे। एक जगह खुले स्थान पर ऐसे पशुओं को बांधकर भी रखा गया था। हमने बूचड़खाने से उस जगह को खुलवाने को कहा, तो थोडी देर में करीब ढाई सौ लोगों की भीड़ ने उन्हें घेर लिया। किसी तरह वे पुलिस की गाड़ियों तक पहुंचे। इस बारे में यलाहांका पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई गई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

(हिन्दू जनजागृति समिति)

कन्नूर से लुधियाना अब गाजीपुर में संघ कार्यकर्ता की हत्या

गाजीपुर : संघ कार्यकर्ताओं की हत्या के मामले थमने का नाम नहीं ले रहे। पंजाब के लुधियाना शहर के बाद अब यूपी के गाजीपुर में अज्ञात बदमाशों ने संघ कार्यकर्ता और स्थानीय पत्रकार राजेश मिश्रा की गोली मार कर हत्या कर दी। वहीं इस घटना में उनके भाई को भी गोली लगी है। जिनकी हालत अभी गंभीर बनी हुई है। फिलहाल पुलिस ने इस मामले में अज्ञात लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली है।

ध्यान रहे कि 4 दिन पहले पंजाब के लुधियाना में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता को गोली मार दी गई थी। इस घटना को बाइक सवार बदमाशों ने अंजाम दिया था। पंजाब के रवींद्र गोसाईं जिनकी उम्र 60 वर्ष थी वह शाखा से अपने घर जा रहे थे तब उन पर फायरिंग हुई थी। इस मामले की जांच एनआईए कर रही है।

(डेलीहन्ट, 21 अक्टूबर)

देवबंद से फतवा जारी

'राम की आरती करने वाली महिलाएं अब मुसलमान नहीं रहीं'

दीपावली के मौके पर हिंदू धर्म के भगवान राम की हिन्दू रीति–रिवाजों से आरती करने को लेकर मुस्लिम महिलाओं के खिलाफ फतवा जारी हुआ है. ये फतवा देवबंद उलेमाओं ने जारी किया है. जिसमे कहा गया कि ये महिलाएं अब मुसलमान नहीं रही।

पत्रिका की रिपोर्ट के अनुसार, दारूलउलूम जकरिया मदरसे के मोहतमिम मौलाना मुफ्ती शरीफ खान ने कहा कि अल्लाह के अलावा किसी और की पूजा करना इस्लाम के खिलाफ है. जिन मुस्लिम महिलाओं ने वाराणसी, लखनऊ या फिर दुनिया के किसी भी कोने में श्रीराम की आरती की है, उन्हें मुस्लिम कहना अब शरियत एतबार से सही नहीं है। इस्लाम में शरियत पूरी दुनिया के लिए एक ही है। शरियत के अनुसार मुसलमान को सिर्फ अल्लाह की इबादत करनी चाहिए। इस्लाम में सिर्फ अल्लाह की इबादत करने की इजाजत है।

शरीफ ने कहा, अगर कोई अल्लाह को छोड़कर किसी और तरीके से किसी अन्य देवी–देवताओं की पूजा–अर्चना करता है तो वह इस्लाम से खारिज हो जाएगा। वो मुसलमान ही नहीं रहेगा, क्योंकि उसने इस्लाम के कानून के खिलाफ काम किया है।

(डेलीहन्ट, 20 अक्टूबर)

पृष्ठ 11 का शेषांश....

दीनदयाल जी के संसार से विदा हो जाने के एक दशक बाद ही जयप्रकाशजी और जनसंघ के बीच इतनी समझदारी बढ़ी कि मार्क्सवादी कम्युनिस्ट ने जनसंघ जेपी एक है के नारों से बंगाल की दीवारें रंग डाली थी। दीनदयाल जी ने उस समय कहा था कि **मत भिन्नता को मनभिन्नता या दुश्मनी मानने की सोच भारतीय सनातन परंपरा के प्रतिकूल है। मतभिन्नता के आधार पर भारत में उद्भूत अनेक पंथों के बीच सहज सामंजस्य का यही रहस्य है।** वचनेशजी चुप जरूर हो गए लेकिन उनके हाव भाव से लग रहा था कि वे अपनी धारणा पर कायम हैं।

आज की राजनीति में ''जो कह दिया सो कह दिया'' की हठवादिता का बोलबाला है जो लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए घातक साबित हो रहा है। संसद में भी इस पर जो कह दिया, सो कह दिया की प्रवृत्ति का प्रभाव देखा जा सकता है। दीनदयाल जी का मानना था कि एक समय में अपनाया गया कोई भी कार्यक्रम या नीति सर्वदा के लिए सभी परिस्थितियों में अपनाने का आग्रह बनाए रखना प्रातिक नहीं है। भारतीय संसति या जीवनशैली इस विचार से अप्रभावित रहने के कारण की अक्षुण्य और प्रवाहयुक्त है। उनके जीवन के एक अन्य उदाहरण से यह अवधारणा समझने में सहायक होगी।

व्यावहारिकता की तुला पर घोषणापत्र

कई राज्यों में जिनमें उत्तर प्रदेश भी शामिल था, 1967 में कांग्रेस को या तो बहुमत नहीं मिला था, या इतना कम बहुमत था कि सत्ता के लोभ में कुछ कांग्रेसी विधायकों के साथ बगावत करने की नेताओं को प्रेरणा मिली। उत्तरप्रदेश में भी कांग्रेस को बहुमत नहीं मिला था, फिर भी चन्द्रभानु गुप्त ने जोड़–तोड़कर सरकार बना लिया था जिसे राज्यपाल के अभिभाषण में विपक्ष के साथ मत देकर चौधरी चरण सिंह और उनके साथी 16 अन्य विधायकों ने अपदस्थ कर दिया था।

चरण सिंह के नेतृत्व में जो सरकार बनी उसमें स्वतंत्र पार्टी, जनसंघ, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, प्रजा समाजवादी पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी, रिपब्लिकन पार्टी के प्रतिनिधि शामिल थे। सरकार के लिए संयुक्त विधायक दल का जो साझा कार्यक्रम बना था, उसमें सवा तीन एकड़ लगान माफी और जनसंघ का किसानों पर लेवी न लगाने का मुद्दा भी शामिल था। चौधरी चरण सिंह ने दोनों को ही मानने से इनकार कर दिया था। सारे देश में 1966 में भयंकर सूखा पड़ने के कारण खाद्यान्न उत्पादन बहुत घट गया था। शहरी आबादी महंगाई की मार से पीड़ित थी।

अतएव सरकार ने खाद्यान्न की किसानों से सीधे खरीदने का कार्यक्रम बनाया। खाद्यान्न व्यापार पर व्यापारियों का एकाधिकार था, इसलिए वे इस सरकारी योजना का विरोध कर रहे थे। जनसंघ को व्यापारियों का समर्थन होने के कारण ''व्यापारियों की पार्टी'' का नामकरण मिला हुआ था। दीनदयाल जी सरकार में खींचतान के बीच लखनऊ आये। नानाजी देशमुख उत्तर प्रदेश जनसंघ के संगठन मंत्री थे। उनके पास एक फियेट कार थी जो वे स्वयं चलाते थे। दीनदयाल जी उनके साथ फियेट में बैठ गए। मैं पीछे की सीट पर बैठा था। कार रायबरेली मार्ग पर ग्रामीण अंचल की ओर चल पड़ी। जहां भी कोई खलिहान दिखाई पडता दीनदयाल जी गाड़ी से उतर कर किसानों से सरकार द्वारा सीधे गेहूं खरीदने के औचित्य के बारे में पूछताछ करते। **क्रमश:**

पृष्ठ 05 का शेषांश.....

लगे। यह मेरी जिंदगी का सबसे बुरा अनुभव था।" भीड़ के पथराव में नंदिनी की कार भी टूट–फूट गई।

नंदिनी ने आगे कहा, "मैंने नहीं सोचा था कि मैं जिंदा बचकर आ पाऊंगी। मिनटों में 150–200 लोग इकट्ठा हो गए, हमें नुकसान पहुंचाने के लिए। वहां हमें बचाने को कोई पुलिस नहीं थी। इस तरह सिर्फ अपराधी ही व्यवहार कर सकते हैं, माफिया के पास ही इतनी भीड़ इतनी जल्दी इकट्ठा करने की कुव्वत होती है। मुझे पूरी तरह लगता है कि इसमें पुलिस भी शामिल है क्योंकि अगर वह जरा भी ईमानदार होती तो एक महिला को इतना खतरा मोल लेने नहीं देती।"

(जनसत्ता, 16 अक्टूबर)

फर्जी बाबाओं की सूची में असीमानंदजी सम्मिलित नहीं

नई दिल्ली, 12 अक्टूबर। गत 10 सितम्बर को अखिल भारतीय अखाडा परिषद् ने इलाहाबाद में हुई अपनी बैठक में देशभर के 14 कथित फर्जी बाबाओं की एक सूची जारी कर हिन्दू समाज को उनसे सावधान रहने को कहा था। इन नामों में एक नाम स्वामी असीमानंद का भी था। इस नाम से मीडिया सहित सम्पूर्ण देश में यह भ्रम हुआ कि वनवासी कल्याण आश्रम से जुड़कर जिन्होंने जनजातियों की सनातन धर्म–संसति के प्रचार, सुरक्षा हेतु उल्लेखनीय कार्य किया और शबरीधाम, जिला डांग (गुजरात) के स्वामी असीमानंदजी ही वो असीमानंद हैं। इसीलिए समाचार पत्रों व टीवी चैनल्स ने उनके फोटो सहित यह समाचार प्रसारित किया।

अखाडा परिषद् के अध्यक्ष स्वामी श्री नरेंद्रगिरिजी एवं महामंत्री स्वामी श्री हरिगिरिजी ने गत 9 अक्टूबर को हरिद्वार से एक स्पष्टिकरण जारी किया है कि 10 सितम्बर को जारी सूची में असीमानंद के बारे में भ्रम हुआ है। सूची में जिस असीमानंद का नाम है वो अमरकंटक का है जो कि गृहस्थ है एवं जिसका आचरण सही नहीं है। इस स्पष्टीकरण में आगे लिखा है "वनवासी कल्याण आश्रम से जुडे स्वामी असीमानंदजी ने तो वनवासी क्षेत्र में तथा सनातन धर्म के लिए बहुत काम किए हैं, परिषद् (अखाडा परिषद्) उनका सम्मान करती है।"

vanvishnu25@gmail.com

पृष्ठ 22 का शेषांश....

पुलिस की पूछताछ में इन रोहिंग्याओं ने असम में प्रवेश करने के अपने रास्ते को दिखाया। इसके बाद पुलिस इन्हें लेकर अभियान चला रही है ताकि उनके जरिए संभावित रोहिंग्याओं के बारे में पता लगाया जा सके। डीजीपी सहाय ने कहा कि छह रोहिंग्याओं समेत अब तक 9 लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है। (5अक्टूबर)

http://ucnews.ucweb.com

अफ्रीका में हजारों वर्ष पहले कैसे पहुंच गया शिवलिंग?

भगवान शिव यानि देवों के देव महादेव को कई नामों से जाना जाता है। लेकिन पौराणिक कथाओं के अनुसार शिव के जन्म का कोई बड़ा प्रमाण नहीं है, वह स्वयंभू हैं तथा सारे संसार के रचयिता हैं।

अफ्रीका या कालद्वीप, एशिया के बाद विश्व का सबस बड़ा महाद्वीप है। दक्षिण अफ्रीका के दक्षिणी छोर पर स्थित एक गणराज्य है। आधुनिक मानव की बसावट दक्षिण अफ्रीका में एक लाख साल पुरानी है। यूरोपीय लोगों के आगमन के दौरान क्षेत्र में रहने वाले बहुसंख्यक स्थानीय लोग आदिवासी थे, जो अफ्रीका के विभिन्न क्षेत्रों से हजार साल पहले आए थे। वैसे तो शिव जी के मंदिर विश्व भर में हैं, चाहे अमेरिका हो, ऑस्ट्रेलिया हो या फिर अफ्रीका। लेकिन हम आपको बता दें कि अफ्रीका में 6 हजार वर्ष पूर्व प्रचलित था हिंदू धर्म। दक्षिण अफ्रीका में भी शिव की मूर्ति का पाया जाना इस बात का सबूत है कि शिव की महिमा और प्रताप पूरे विश्व भर में है।

साउथ अफ्रीका के सुद्वारा नामक एक गुफा में पुरातत्वविदों को महादेव की 6 हजार वर्ष पुराना शिवलिंग मिला, जिसे कठोर ग्रेनाइट पत्थर से बनाया गया है। इस शिवलिंग को खोजने वाले पुरातत्ववेत्ता हैरान हैं कि ये शिवलिंग यहां अभी तक सुरक्षित कैसे रह पाया है।

हाल ही में दुनिया की सबसे ऊंची शिवशक्ति की प्रतिमा का अनावरण भी दक्षिण अफ्रीका में किया गया। बेनोनी शहर के एकटोनविले में यह प्रतिमा स्थापित की गई है। इसके अनावरण के बाद शिव की महिमा चारो ओर फैल गई है। 10 कलाकारों ने 10 महीने की कडी मेहनत के बाद इस प्रतिमा को तैयार किया है। कलाकार भारत से गए थे। इस 20 मीटर ऊंची प्रतिमा को बनाने में 90 टन के करीब स्टील का इस्तेमाल हुआ है। (9अक्टूबर)

http://www.jansatta.com

केरल: ६ अनु.जाति सहित ३६ अब्राह्मण पुजारी नियुक्ति

तिरुअनंतपुरम (प्रेट्र)। केरल के मंदिरों में पहली बार छह दलितों को पुजारी बनाए जाने की सिफारिश की गई है। इनको राज्य के उन मंदिरों में पुजारी बनाने की संस्तुति की गई है जिनके प्रबंधन की जिम्मेदारी त्रावणकोर देवास्वोम बोर्ड (टीडीबी) पर है।

केरल देवास्वोम भर्ती बोर्ड ने अनुसूचित जाति के छह लोगों समेत 36 गैर ब्राह्मण को बतौर पुजारी नियुक्त करने की संस्तुति की है। भर्ती बोर्ड ने बयान में कहा कि इसके लिए लोक सेवा आयोग (पीएससी) की तर्ज पर लिखित परीक्षा कराई गई और साक्षात्कार लिया गया। देवास्वोम के मंत्री के. रामचंद्रन ने साफ कहा कि भ्रष्टाचार के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए। चयन के लिए योग्यता और आरक्षण संबंधी ही आधार थे। कुल 62 पुजारियों की नियुक्ति के लिए सिफारिश की गई। इनमें से 26 पदों पर अगड़ी जाति के पुजारी नियुक्त होंगे।

टीडीबी के पास सबरीमाला के प्रसिद्ध भगवान अय्यप्पा मंदिर समेत 1248 मंदिरों की जिम्मेदारी है। यह बोर्ड त्रावणकोर–कोचीन हिंदू धार्मिक संगठन अधिनियम 1950 के तहत काम करता है। (6 अक्टूबर)

मंदिर के पुजारी से विवाह करने पर महिला को ३ लाख रूपये देगी तेलंगाना सरकार

तेलंगाना में मंदिर के पुजारियों से विवाह करने पर महिलाओं को राज्य सरकार की ओर से 'कल्याणमस्तु' योजना के अंतर्गत 3 लाख रूपये दिए जाएंगे। मुख्यमंत्री के सलाहकार के. वी. रमनाचारी ने बताया कि नवंबर में लॉन्च होने वाली इस योजना की शुरूआत इसलिए हो रही है क्योंकि कम कमाई के कारण महिलाएं मंदिरों के पुजारियों से शादी नहीं करना चाही हैं।

ऑस्ट्रिया: पूरा चेहरा ढंकने वाले नकाब पर पूरी पाबंदी लागू

ऑस्ट्रिया में चेहरा ढंकने वाले नकाब के इस्तेमाल पर रोक के लिए लाया गया कानून रविवार से लागू हो गया है।

सरकार ने देश के सामाजिक मूल्यों का हवाला देते हुए कहा है कि नए कानून के तहत महिलाओं की ठुड्डी से

लेकर माथा हर हाल में दिखना चाहिए। (1अक्टूबर) (बीबीसी हिन्दी)

दिल्ली में सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य राज्याभिषेक समारोह को सम्बोधित करते संघ सह-सरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल तथा मंचस्थ गणमान्य महानुभाव

विविध महर्षि वाल्मीकि जयन्ती कार्यक्रमों में विहिप सह-संगठन महामंत्री विनायकराव देशपाण्डे

भीलवाड़ा

बडोदरा

मुजफ्फरनगर

नेपाल में विहिप सम्मेलन

email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-1/4031/2015-17
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
मुद्रण- तिथि : 28.10.17
प्रेषण तिथि : 29-30 (अग्रिम-पाक्षिक)

रे विलियम्स, बहु संस्कृति कार्य मंत्री, न्यू साउथ वेल्स (आस्ट्रेलिया) स्वामी विज्ञानानन्दजी, श्रीमती अकिला रामरत्नम् के साथ सिडनी वेद पाठशाला के अध्यापक।

सिडनी वेद पाठशाला का दसवां वार्षिकोत्सव

विहिप आस्ट्रेलिया–प्रकल्प सिडनी वेद पाठशाला एवं बाल संस्कार केन्द्र के तत्वावधान में 17 सितम्बर को कैस्टल हिल लाईस्कूल न्यू साउथवेलन, आस्ट्रेलिया में वार्षिकोत्सव– 2017 को आयोजित किया गया। समारोह में रे विलियम्स–एम0पी0 कैस्टल दिल, न्यू साउथ वेल्स मंत्री, मिस जोडी मैकेय, एम0पी0 स्टार्थफील्ड न्यू साउथ वेल्स, स्वामी विज्ञानानंद, संयुक्त महामंत्री विहिप सहित प्रतिष्ठित पत्रकार व महानुभाव सम्मिलित रहे। श्रीमती अकिला रामारत्नम् ने प्रस्ताविक प्रस्तुत किया। सुब्रमण्यन राममूर्ति–अध्यक्ष विहिप आस्ट्रेलिया ने कार्यक्रम को प्रारंभ करने की घोषणा की।

vigyananand64@gmail.com

ऋग्वेद के श्री सूक्तम् का पाठ करते वेद पाठशाला के विद्यार्थी

''लोकहितम् मम करणीयम्'' का सुमधुर गायन करते बाल संस्कार केन्द्र के छात्र

प्रकाशक व मुद्रक परमानन्द मनोहर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'साइबर क्रिएशन्स' जे.ई.–9, खिड़की एक्सटेंशन, मालवीय नगर, नई दिल्ली–17 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : मानवेन्द्र नाथ पंकज